पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती जी के व्यक्तित्व के विविध आयाम

– पुरोवाक् –

प्रो. अनुपम जैन, इन्दौर

– लेखक –

सुरेश जैन (आई.ए.एस.)

न्यायमूर्ति विमला जैन

प्रकाशक

गणिनी ज्ञानमती शोधपीठ

डी-20, सुदामानगर, इन्दौर (म.प्र.)

एवं

सिंघई सतीशचन्द्र केशरदेवी जैन जनकल्याण संस्थान, नैनागिरि

30, निशात कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)

कृति – पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के
व्यक्तित्व के विविध आयाम

लेखक – सुरेश जैन (I.A.S.) एवं
(न्यायमूर्ति) विमला जैन

पुरोवाक् – डॉ. अनुपम जैन

संस्करण – प्रथम, 2021

I.S.B.N. No. – 00

प्रकाशक – गणिनी ज्ञानमती शोधपीठ
डी–20, सुदामा नगर, इन्दौर (म.प्र.)
एवं
सिंघई सतीशचन्द्र केशरदेवी जैन जनकल्याण संस्थान, नैनागिरि
30, निशात कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)

मुद्रक – सुगन ग्राफिक्स
एल.जी.–11, ट्रेड सेन्टर, इन्दौर
फोन : 0731–4065518

आमुख

1. जैन संस्कृति के आधारभूत स्तंभ आचार्य धरसेन, पुष्पदंत और भूतबली के षट्खण्डागम की प्रथम श्रमणधारा और आचार्य कुन्दकुन्द के षट् प्राभृत की द्वितीय श्रमणधारा को समेकित कर पूज्य ज्ञानमती जी ने जैन संस्कृति के विशाल प्रयागराज की रचना की है। इस प्रयागराज का अमृत हम सबको सदैव प्राप्त होता रहता है। जम्बूद्वीप और ऋषभगिरि की जननी ज्ञानमती जी ज्येष्ठतम, वरिष्ठतम और श्रेष्ठतम आर्यिका है। वे ज्ञानवृद्ध है। तपोवृद्ध है। हमारी श्रद्धा और आस्था से आपूरित प्रज्ञा और मेघा की चलती फिरती महादेवी है। वे शरद पूर्णिमा की धवल चॉदनी से अपनी शीतल किरणों से और शारदेय पूर्णचन्द्र की चंद्रिका से जन–जन को शांत और आल्हादित करती हैं। हमने कोरोना काल में उनका 87 दिवसीय गुणानुवाद का आनंद प्राप्त किया है। सन् 1934 में जन्मी मैना के मधुर कण्ठ से निकली जिनवाणी की मधुर वाणी का आनंद लिया है। गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माता जी और उनके गृहस्थ जीवन की छोटी बहिन एवं **प्रथम शिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माता जी** ने इस गुणानुवाद को जन–जन तक पहुँचाया है।
2. माता जी के भौतिक, शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक अवदान से हम सभी बहुत प्रभावित रहे हैं। अतः परम पूज्य माता ज्ञानमती जी, चंदनामती जी, पीठाधीश स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी और उनकी संघस्थ माताऐं और विद्वान हमारे चिंतन और लेखनी के केन्द्र में रहे है। इस पुस्तिका में हमने अपने और अपनी पत्नि न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जैन और उनकी देवरानी डॉ. संगीता जैन, श्रीमती वर्षा सिंघई, एडवोकेट के आलेखों और उद्बोधनों को संकलित किया है। सभी लेख और उद्बोधन सहज और सरल भाषा में उनके विशाल व्यक्तित्व के विविध पक्षों को उद्घाटित करते हैं।
3. हमारे जीवन के 75 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर 17 अक्टूबर, 2020 को आयोजित हीरक जयंति समारोह से संबंधित ई–संगोष्ठी में हमें श्रद्धेय महास्वामी रवीन्द्रकीर्तिजी ने एवं आत्मीयता से ओत–प्रोत माता जी ने अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया है और ऋषभगिरि, मांगीतुंगी के लिए भूमि आवंटन कराने संबंधी हमारे प्रयासों की सराहना की है। हम उनके प्रति अपनी

कृतज्ञता का ज्ञापन करते है और नैनागिरि में विराजे भगवान पार्श्वनाथ से प्रार्थना करते हैं कि इसी प्रकार से उनका अजस्र स्नेह हमें सदैव प्राप्त होता रहें।

4. हमारे अभिन्न साथी प्रोफेसर अनुपम जैन, इन्दौर ने इस संकलन का वाचन करने के साथ ही पुरोवाक् लिख कर अपनी सदाशयता व्यक्त की है । पूज्य गणिनी माता जी के संघ के साथ उनका 40 वर्षीय सतत सम्पर्क एवं समर्पण उन्हें इसका सर्वश्रेष्ठ पात्र बनाता है। हम उनके आभारी हैं ।
5. गणिनी ज्ञानमती शोधपीठ, इन्दौर ने कृति के प्रकाशन में सहभागी बन अपनी विनयांजलि समर्पित की है उनके प्रति साधुवाद।

सुरेश जैन (I.A.S.)
(न्यायमूर्ति) विमला जैन

पुरोवाक्

इतिहास साक्षी है कि भगवान महावीर की परम्परा में लगभग 2500 वर्षों तक आचार्यों / मुनियों / भट्टारकों एवं पंडितों ने ही ग्रंथ रचना की, किसी गणिनी या आर्यिका द्वारा ग्रंथ रचना का कोई उल्लेख नहीं मिलता। जैन शास्त्र भंडारों को खगालने पर भी इसकी पुष्टि होती है। 1–2 स्तुतियाँ जरूर महिलाओं द्वारा लिखे जाने के उल्लेख हैं किन्तु किसी आगम ग्रंथ या उसकी टीका लिखने का प्रमाण नहीं।

1956 में चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज की परम्परा के प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागरजी महाराज से माधोराजपुरा (राज.) में दीक्षित गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने पूर्व से पश्चिम एवं उत्तर से दक्षिण हजारों कि.मी. की पदयात्राएं कर संस्कारों का अलख जगाया हैं नैतिक मूल्यों एवं श्रावकोचित संस्कारों का लाखों मानवों में बीजारोपण किया किन्तु उनका सर्वाधिक चर्चित योगदान 450 से अधिक ग्रंथों कासृजन कर इतिहास बनाना है। .... में जिन सहस्रनाम स्तोत्र के सृजन से प्रारम्भ आपकी साहित्यिक यात्रा आज भी सतत जारी है। जैन विद्या के लगभग सभी क्षेत्रों में आपने अपनी छाप छोड़ी है। कुछ प्रमुख क्षेत्रों में सृजित आपकी कृतियाँ निम्नवत् हैं –

सिद्धान्त	–	षट्खंडागम की सिद्धान्तचिन्तामणि टीका
अध्यात्म	–	समयसार की आत्मज्योति टीका
	–	नियमसार की स्याद्वादचन्द्रिका ओका
न्याय	–	अष्टसहस्री का अनुवाद
व्याकरण	–	कातन्त्र रूपमाला का अनुवाद
आचार	–	मूलाचार का अनुवाद
कर्मसिद्धान्त	–	गोम्मटसार जीवकांड एवं कर्मकांड का सार
स्तुति साहित्य	–	जिनस्तोत्र संग्रह
भूगोल–खगोल	–	त्रिलोक भास्कर, जैन ज्योतिर्लोक, जम्बूद्वीप
आत्मकथा	–	मेरी स्मृतियाँ
इतिहास	–	दिगम्बर मुनि, गौतम गणधरवाणी, भाग 1–4,चैत्यभक्ति, भरत का भारत
प्रवचन संग्रह	–	ज्ञानामृत, भाग 1–4
पाठ्यपुस्तक	–	प्रवचन निर्देशिका, मंडल हवनपूजन प्रारम्भ विधि
विधान	–	इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, सिद्धचक्र आदि
उपन्यास/कथा	–	परीक्षा, प्रतिज्ञा, आटे का मुर्गा
बाल एवं नारी साहित्य	–	बाल विकास, भाग 1–4, नारी आलोक, जैन बाल भारती आदि

इन सभी कृतियों के सृजन के पीछे माताजी का मनोभाव संस्कृति का संरक्षण रहा है। भगवान ऋषभदेव जन्म कल्याणक महोत्सव वर्ष एवं गौतम गणधर वर्ष जैसे आयोजनों के पीछे उनका उद्देश्य समाज को एतदर्थ जागृत करना ही रहा है। विगत अनेक वर्षों से आप तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास हेतु सजग हैं। 24 तीर्थंकरों का जन्म 16 स्थानों पर हुआ है जिनमें से आपकी प्रेरणा से अयोध्या, वाराणसी, काकन्दी, भद्रिकापुरी, चम्पापुरी (भागलपुर), सिंहपुरी (सारनाथ), रत्नपुरी (फैजाबाद), हस्तिनापुर, राजगृही एवं कुण्डलपुर (नालंदा) में अनेक विकास कार्य सम्पन्न हुए है। सम्प्रति अयोध्या का विकास द्रुतगति से चल रहा है। हस्तिनापुर में निर्मित जम्बूद्वीप परिसर तो आपके प्रयासों से अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल बन गया है।

सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी में ऋषभगिरि पर विश्व की सबसे बड़ी 108 फीट की भगवान ऋषभदेव की खड्गासन मूर्ति की स्थापना एवं ऋषभदेव तपस्थली – प्रयाग का विकास भगवान ऋषभदेव के विश्व व्यापी प्रचार हेतु श्लाघनीय प्रयास है। इन प्रयासों से ही आज आप जैन समाज की Opinion Leader है। बुन्देलखण्ड जैन संस्कृति का गढ़ है यहां अनेक प्रसिद्ध तीर्थ हैं माताजी ने कभी बुन्देलखण्ड की यात्रा नहीं कीथी किन्तु भाई सुरेशजी जैन एवं बुन्देलखण्ड की जनता के विशेष आग्रह पर आपने मांगीतुंगी से अयोध्या का 2018 का विहार बुंदेलखण्ड होकर किया। इसी क्रम में आप भगवान पार्श्वनाथ के प्रसिद्ध जैन तीर्थ नैनागिरि पधारी। श्री सुरेश जैन जी इस तीर्थ के अध्यक्ष है। मांगीतुंगी एवं नैनागिरि प्रवास के संस्मरणों को संजोते हुए भाई सुरेश जी एवं उनकी धर्मपत्नी (न्यायमूर्ति) विमला जैन जी द्वारा लिखे गये आलेखों को ही इस पुस्तक में संकलित किया गया है। पूज्य माताजी (द्वय) द्वारा नैनागिरि प्रवास में लिखित स्तुतियां इसके महत्व को वृद्धिंगत कर रही है।

भाई सुरेश जी वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी रहे है एवं (न्यायमूर्ति) विमला जैन जी मध्यप्रदेश उच्चन्यायालय की न्यायाधीश रही है। इन दोनों पदों पर कार्यरत व्यक्तियों की आदत ही प्रामाणिक, सटीक एवं बिन्दुवार लेखन की हो जाती है। यह उनके स्वभाव का अंग बन जाता है। सौभाग्य से यह दम्पत्ति धर्मनिष्ठ, संस्कारवान परिवार के सदस्य हैं। देव–शास्त्र–गुरु के प्रति आपकी आस्था है। गुरुओं का सम्मान करते है। गुणग्राही है फलतः पूज्य माता जी के जीवन के अनेक पक्षों को उजागर करने वाली यह प्रामाणिक पुस्तक सृजित की हैं मैं इस श्रेष्ठ कृति की प्रस्तुति हेतु जैन दम्पत्ति को साधुवाद देता हूँ। दोनों प्रकाशन संस्थायें भी साधुवाद की पात्र है।

डॉ. अनुपम जैन
निदेशक – गणिनी ज्ञानमती शोधपीठ
'ज्ञानछाया', डी–14, सुदामानगर, इन्दौर–452009
मो.: 94250 53822
ई–मेल : anupamjain3@rediffmail.com

विषय वस्तु

स.क्र.	शीर्षक	
01.	नैनागिरि स्तुति – डॉ. पं. पन्नालाल जैन, सागर	01
02.	नैनागिरि वंदना – पं. शिवचरणलाल जैन, मैनपुरी	01
03.	णेणागिरि विहवं (नैनागिरि वैभव) – डॉ. अनेकांत जैन, नई दिल्ली	02
04.	उपसर्गविजयि श्री पार्श्वनाथ जिनस्तुतिः – गणिनी ज्ञानमती जी	03
05.	पार्श्वनाथ स्तुतिः – गणिनी ज्ञानमती जी	03
06.	ज्ञानमती जी और चन्दनामती जी द्वारा नैनागिरि में तत्काल विरचित रचनाऐं	03
	6.1 श्री पार्श्वनाथ स्तुति (सप्त विभक्तियों में) – गणिनी ज्ञानमती जी	04
	6.2 नैनागिरि सिद्धक्षेत्रस्य स्तुतिः – आर्यिका चन्दनामती जी	04
	6.3 नैनागिरि तीर्थ वंदना – आर्यिका चन्दनामती जी	05
	6.4 अंग्रेजी सांग (ENGLISH SONG) – आर्यिका चन्दनामती जी	05
07.	परम पूज्य ज्ञानमती जी का वंदन	06
08.	ज्ञानमती जी – पूरे जैन विश्व की Thought Leader – सुरेश जैन	06
09.	प्रयागराज से नैनागिरि और नैनागिरि से अयोध्या – सुरेश जैन	10
10.	''अहिंसा से शांति एवं पर्यावरण शुद्धि'' संगोष्ठी 15 जून, 2020 में प्रस्तुत आलेख – सुरेश जैन	13
11.	भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद द्वारा आयोजित वेबिनार 17 अगस्त, 2020 में संबोधन – सुरेश जैन	17
12.	पूज्य ज्ञानमती जी की नैनागिरि यात्रा – सुरेश जैन	22
13.	मांगी–तुंगी में निर्मित विश्व की सर्वोच्च जैन प्रतिमा के दर्शन करें – सुरेश जैन	29
14.	वाग्देवीं ज्ञानमतीं समुपासमहे – न्यायमूर्ति विमला जैन	36
15.	प्रज्ञाश्रमणी चंदनामती जी – न्यायमूर्ति विमला जैन	40
16.	पार्श्वनाथ समवसरण स्थली नैनागिरि जी में गणिनीप्रमुख आर्यिका ज्ञानमती जी – न्यायमूर्ति विमला जैन	43

17.	स्टेच्यू ऑफ अहिंसा के महामस्तकाभिषेक के अवसर पर ऋषभगिरि (मांगीतुंगी) में प्रदत्त उद्बोधन दिनॉक 22.10.2016 – न्यायमूर्ति विमला जैन	48
18.	द्रोणागिरि में माता जी के आगमन पर स्वागत उद्बोधन–दिनांक 01 फरवरी, 2019 – न्यायमूर्ति विमला जैन	51
19.	श्रीमती सुमन जैन, इन्दौर द्वारा 28 अक्टूबर, 2020 को आयोजित पूज्य गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी के गुणानुवाद की श्रृंखला में दिया गया उद्बोधन–न्यायमूर्ति विमला जैन	54
20.	आर्यिकाशिरोमणी ज्ञानमती माता जी की ससंघ नैनागिरि यात्रा – डॉ. संगीता जैन	56
21.	मेरे वृहद परिवार को नैनागिरि जी में गणिनी प्रमुख ज्ञानमती माता जी का आशीर्वाद – श्रीमती वर्षा सिंघई, एडवोकेट	59
22.	माता ज्ञानमती ध्यान केन्द्र नैनागिरि का लोकार्पण, 20 जनवरी, 2019	60
23.	आचार्य शांतिसागर जी की नैनागिरि यात्रा – सुरेश जैन	61
24.	कविता	62

(1) नैनागिरि स्तुति

श्री मन्नाकनरेन्द्र वन्दित पदः श्री पार्श्वनाथः प्रभु,
यंत्रागत्य शशास भव्यनिकरं सद्धर्मतत्वं चिरम्।
तप्त्वा यत्र तपः प्रतिग्ममचिरं याताः शिवं शाश्वतं,
वरदत्तादि मुनीश्वरा गुणधरा ध्वस्ताष्टकर्मव्रजाः ।।
नमामो रेशन्दी गिरि मघविघाताय खलु तम्।।

– डॉ. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य,
सागर (म.प्र.)

लक्ष्मी से युक्त इन्द्रों तथा चक्रवर्तियों से जिनके चरण वन्दित थे ऐसे पार्श्वनाथ भगवान ने जहॉ आकर बहुत समय तक भव्य जीवों के समूह को समीचीन धर्म की देशना दी और जहॉ कठिन तप तपकर गुणों के धारक इन्द्रदत्त, गुणदत्त, वरदत्त, सायरदत्त और मुनीन्द्रदत्त मुनिराज अष्टकर्मो के समूह को नष्ट कर शीघ्र ही अविनाशी मोक्ष को प्राप्त हुये थे। निश्चय से पाप नष्ट करने के लिए उस नैनागिरि (रेशन्दीगिरि) जैन तीर्थ को हम प्रणाम करते हैं।

(2) नैनागिरि वंदना

दीक्षासुशिक्षाप्रमुखैः प्रयत्नैः, संपोषितानां सुतनिर्विशेषं।
निर्ग्रंथ प्रियशिष्यकल्याणभूमिः, नैनागिरिं तं तीर्थं नमामि।।

– पं. शिवचरनलाल जैन
मैनपुरी (उ.प्र.)

दीक्षा, श्रेष्ठ कल्याणकारी शिक्षा आदि प्रयासों द्वारा निर्ग्रन्थ आचार्यो ने जिन प्रियशिष्यों का पुत्रवत् संपोषण किया है, उनकी कल्याणकारी भूमि श्री नैनागिरि तीर्थ की मैं वन्दना करता हूॅ।

(3) णेणागिरि–विहवं

(नैनागिरि वैभव)

– प्रो अनेकांत कुमार जैन, नई दिल्ली

(उग्गाहा छंद)

णमो तित्थाणं जत्थ, पासाणं य होही समवसरणं ।।
होही णिव्वाणजत्थ इंदवरगुणसायरमुणिन्दाणं ।।1।।

भावार्थ –उस तीर्थ को नमन जहाँ तीर्थंकर पार्श्वनाथ का समवसरण हुआ था तथा जहाँ से इन्द्रदत्त, वरदत्त, गुणदत्त ,सायरदत्त और मुनीन्द्रदत्त मुनियों ने निर्वाण प्राप्त किया था।

सिद्धसिलापरिपुण्णं,सेमरापठार–सेलचित्ताणं।
वीरसरोवरेण खलु , मज्झे सोहइ णेणागिरितित्थं ।।2।।

भावार्थ – सेमरा पठार नदी के पास शैल चित्रों से परिपूर्ण सिद्धशिला और निश्चित ही मध्य में महावीर नामक सरोवर से नैनागिरि तीर्थ शोभायमान हो रहा है ।

भव्वो विसालपडिमं ,दंसणेण णमो मुणिसुव्वयाणं ।
दौलरामवण्णी किय,जिणभत्ता खलु करन्ति पूयाणं ।।3।।

भावार्थ – भव्य विशाल प्रतिमा के दर्शन के माध्यम से तीर्थकर मुनिसुव्रतनाथ को मेरा नमस्कार है जहाँ बैठकर जिनेन्द्र भगवान् के भक्त श्रावक बाबा दौलतराम वर्णी जी द्वारा रचित पूजाओं को करते हैं।

णेणातित्थे तविओ, सयय णमो विज्जासायाराणं ।
णागो वि सुणइ धम्मं,जं देसणा 'अणेयंत'–पवयणं ।।4।।

भावार्थ – नैना गिरि तीर्थ पर तपस्या करने वाले उन आचार्य विद्यासागर महाराज को भी मेरा सतत नमस्कार है जिनकी अनेकांत प्रवचनदेशना रूप धर्म को सर्प भी भक्तिभाव पूर्वक सुनते हैं।

तवीअ गणेसवण्णी,सयय सेवइ सुरेसपसासणियं ।
भायउयफूलचंदा,विउसाणं जणगं णेणातित्थं ।।5।।

भावार्थ – यह नैनागिरि तीर्थ, गणेशप्रसाद वर्णी जी की तपस्या का तीर्थ है , सुरेश जैन (आई.ए.एस.) प्रशासनिक की सतत सेवा का तीर्थ है और निश्चित ही प्रो.भागचंद जैन , प्रो उदयचंद जैन जैसे प्राकृत भाषा के तथा प्रो.फूलचंद जैन 'प्रेमी' जैसे जैनदर्शन के विद्वानों को उत्पन्न करने वाला तीर्थ है।

(4) उपसर्गविजयि श्रीपार्श्वनाथ जिनस्तुतिः

श्रीपार्श्वनाथस्य नमोऽस्तु तुभ्यं।
दुःखार्तिनाशाय नमोऽस्तु तुभ्यं।।
अभीप्सितार्थाय नमोऽस्तु तुभ्यं ।
त्रैलोक्यनाथाय नमोऽस्तु तुभ्यं ।।23।।

— गणिनी ज्ञानमती जी

(5) श्री पार्श्व जिनस्तुति

नमोऽस्तु गतजन्मने भवसमुद्रसंशोषिणे।
नमोऽस्तु गतमृत्यवे सकलसौख्यसंपोषिणे।।
नमोऽस्तु गतकर्मणे सकलभव्यसंतोषिणे।
नमोऽस्तु जिनपार्श्व! ते सकलमोहसंहारिणे।।8।।

— गणिनी ज्ञानमती जी

(6) ज्ञानमती जी और चन्दनामती जी द्वारा नैनागिरि में तात्कालिक विरचित रचनाऐं

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि नैनागिरि जैन तीर्थ के अध्यक्ष श्री सुरेश जैन ने पूज्य ज्ञानमती माता जी और चन्दनामती माता जी को शिलाखण्ड में उत्कीर्ण डॉ. पन्नालाल जी साहित्याचार्य, सागर द्वारा लिखित नैनागिरि वंदना और पं. शिवचरणलाल जैन, मैनपुरी द्वारा विरचित नैनागिरि स्तुति का अवलोकन कराया और उनसे निवेदन किया कि वे भी हमें नैनागिरि में विराजे भगवान पार्श्वनाथ और जैन तीर्थ पर अपनी छोटी सी रचना दें। परम पूज्य ज्ञानमती जी और पूज्य चन्दनामती जी ने रात्रि में ही संस्कृत, हिन्दी और अँग्रेजी में निम्नांकित तीन रचनाऐं तैयार कर प्रातःकाल ही पारस चैनल पर प्रसारित कीं और अपनी हस्तलिखित प्रतियाँ सुरेश जी को प्रदान की।

(6.1) श्री पार्श्वनाथ स्तुतिः

(सप्तविभक्तियों में)

अनुष्टुप छन्द

श्री पार्श्वनाथ तीर्थेश – उपसर्गजयी महान्।
पार्श्वनाथं नमन्तीह, भक्ताः कष्टप्रहाणये।।1।।
पार्श्वनाथेन सद्भक्ताः, भवन्तीह सहिष्णवः।
पार्श्वनाथाय सद्भक्तया–ऽनन्तानन्ता नमोऽस्तु मे ।।2।।
पार्श्वनाथात् क्षमाभावै, भक्तोऽभूत् कमठो रिपुः।
पार्श्वनाथस्य भक्त्या मे, शक्तिः सर्वसहा सदा।।3।।
पार्श्वनाथे मतिर्मेस्यात्, यावत् सिद्धिर्न में भवेत्।
श्री पार्श्वनाथ ! मां रक्ष, सम्यग्ज्ञानमतीं कुरू।।4।।

– गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

(6.2) नैनागिरि सिद्धक्षेत्रस्य स्तुतिः

उपजाति छंद –

यत्र स्थितः पार्श्वसमवसृतादिः।
यत्र स्थिताः पंचऋषीशप्रतिमाः।।
यत्र त्रिपंचाशच्चैत्यनिलयाः।
नैनागिरिः सः नयनाभिरामः।।1।।

अनुष्टुप छंद –

भारते मध्यभागे हि, स्थितोऽयं तीर्थसुन्दरः।
रेशिन्दीपर्वतेर्नाम्ना, सिद्धक्षेत्रं नमाम्यहं।।2।।
ज्ञानमत्यार्यिकामाता, गणिन्यां प्रमुखा कलौ।
क्षेत्रेऽस्मिन् समायाता, सप्तार्यासंघसंयुता।।3।।
ब्राह्मी माता स्वरूपा सा, शारदा ज्ञानदायिनी।
चन्दनामतिशिष्यायाः पूर्यात् सर्वं मनोरथं।।4।।
पौषशुक्ला चतुर्दश्यां, अभिषेकोऽभवत् वृहत्।
शान्तिधारामकुर्वन् ये, भक्ताः प्राप्स्यन्ति वाञ्छितम्।।5।।

शार्दूलविक्रीडित छंद –

यः पार्श्वप्रभुरात्मज्ञानसहितः शान्तिः क्षमामण्डितः।
यः कमठाचररूद्रकष्टविजयी उपसर्गजेता प्रभुः।।
रेशिन्दीगिरिपर्वतोपरि प्रभुः दिव्यध्वनिः श्रावयत्।
तं पार्श्वं नैनागिरिं च तीर्थं प्रणमाम्यहं कोटिशः।।6।।

(6.3) नैनागिरि तीर्थ वंदना

नयनों का आनन्द प्रदाता, नैनागिरि जी तीर्थ है।
पार्श्वनाथ के समवसरण से बढ़ी तीर्थ की कीर्ति है।।
वरदत्तादि पंच ऋषियों की, सिद्धभूमि को शत्–शत् वंदन।
तीरथ पर निर्मित सब जिनमंदिर जिनप्रतिमाओं
को नमन/अभिनन्दन/वंदन।।1।।

– आर्यिका चन्दनामती जी

(6.4) SONG

Tune - Mere Desh Ki Dharti.......

Earth of our Nation has given us many pious Teerthas,
Earth of our Nation has given us many pious Teerthas,
Our Nation is called today the Bhaarat on the name of Emperror Bharat,
He was the son of Lord Rishabh, First Teerthankar of this era.
Ho..........Ho............Ho...........
This Country of Chakresh Bharat, is mainly supreme Teerth.
Earth of our Nation has given us many pious Teerthas,
This M.P. State is situated in the center of country Bhaarat,
And Nainagiri is the beautiful ancient Siddhakshetra in Bundelkhand.
Ho..........Ho............Ho...........
Samavasaran of Lord Parshva has been created on this Parvat.
Earth of our Nation has given us many pious Teerthas,
Gyanmati Mataji has come here, as like Brahmi Mata,
"Chandnamati" says this Yatra is very historical yatra.
Ho..........Ho............Ho...........
These are golden moments for you, O religious Gentlemen.
Earth of our Nation has given us many pious Teerthas.

- Aryika Chandnamati

(7) परम पूज्य ज्ञानमती माता जी का वंदन

पिच्छि कमण्डलुधारी माता, नमन तुम्हें हम करते हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, अर्घ्य समर्पण करते हैं।।
युग की पहली ज्ञानमती के, चरणों में अभिवन्दन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन हैं।।

(8) ज्ञानमती जी : पूरे जैन विश्व की थाट लीडर (Thought Leader)

सुरेश जैन (I.A.S.)

1. माता ज्ञानमती जी अपनी अपार मातृत्व और गुरुत्व शक्ति से तथा माता चंदनामती जी अपनी ममतापूर्ण विद्वत्ता के असाधारण आकर्षण से ब्राह्मी – सुन्दरी की भाँति जन–जन को अपनी ओर आकर्षित करती है। उनकी पवित्र भावभूमि ने उन्हें हिमालयीन आध्यात्मिक शिखर पर सुप्रतिष्ठित कर दिया है। दर्शन विशुद्धि आदि सोलह भावनाऐं ही उनके चिंतन का आधार है। यही भावनाऐं उनके जीवन को गति प्रदान करती हैं। वे अपने मन, वचन और कार्य की क्रियाओं से जन–जन को प्रसन्न रखती हैं। वे छोटे से छोटे व्यक्ति को भी पूरा मान–सम्मान और हार्दिक स्नेह प्रदान करती हैं। अपनी परंपरा से ऊपर उठकर समूची जैन संस्कृति के चतुर्मुखी विकास के लिए प्रयत्न करती हैं। विविध परंपराओं से ऊपर उठकर भगवान महावीर की समेकित परंपरा को आगे बढ़ाती हैं। उनका प्रत्येक कार्य परहित के लिए होता है। उनके सभी दर्शक घुल मिलकर एक हो जाते है। उनमें सभी प्रकार के भेद–भाव समाप्त हो जाते हैं। उनके मन से तेरे–मेरे की भावना दूर हो जाती है। वे कहती है कि हम अच्छे इंसान बने। अच्छे कर्मों का फल इसी जन्म में ही हमें मिल जाता है।
2. पूज्य ज्ञानमती माता जी की प्रबंधन क्षमता उत्कृष्टतम श्रेणी की है। अत्यधिक सराहनीय है। माता जी के महान् पुण्यप्रासाद के सुदृढ़ स्तंभ कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी सभी योजनाओं का सर्वोत्तम ढंग से न्यूनतम समयावधि में गुणवत्तापूर्ण कार्यान्वयन कराने में सिद्धहस्त हैं। अ. भा.दिग. जैन युवा परिषद् के अध्यक्ष और सम्यक्ज्ञान पत्रिका के प्रबंध संपादक डॉ. जीवन प्रकाश जैन अपने कुशलतम संगठन कौशल और श्रेष्ठ संपादन के उत्कृष्ट उदाहरण स्थापित करते हैं।

3. परम पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी हिमालयीन व्यक्तित्व की धनी है। उन्हें दो विश्वविद्यालयों द्वारा डी.लिट् की मानद उपाधि से अलंकृत किया गया। माता जी ने सरस्वती की जीवंत प्रतिमा बनकर जैन आगम और साहित्य के 450 से अधिक ग्रन्थों की रचना की है। राष्ट्र के सभी जैन संतों की तुलना में पूज्य माता जी सर्वाधिक लौकिक उपाधियों से विभूषित, विश्व प्रसिद्ध सांस्कृतिक रचनाकार और साक्षात सरस्वती देवी है। उनका हृदय गंगाजल की भॉति पवित्र और निर्मल है। पूज्य माता जी की दिव्य दृष्टि जन–जन को अपनी ओर आकर्षित करती है। उनकी ऑखों से हर व्यक्ति के लिए सहज ही ममता प्रगट होती है। वाणी से स्नेह प्रगट होता है। व्यवहार से सम्मान प्रगट होता है। उनके सधे हुए व्यक्तित्व से सदैव ममता, स्नेह और करुणा की शुचि धाराऐं बहती रहती हैं।

4. प्रत्येक दर्शक अपनी ऑखों से देखता है कि वे अपना सब कुछ देने के लिए इच्छुक रहती है। दुःखी जनों को तुरंत ही अपना आशीर्वाद प्रदान करती है। उनके सिर पर अपनी पावन पिच्छी रख देती हैं। उन्हें देने में बड़ी खुशी मिलती है। अपनी साधना की शक्ति का इस्तेमाल दूसरों के दुख दर्द को दूर करने और उन्हें खुशी देने के लिए करती है। माता जी अपने दर्शकों, श्रोताओं और पाठकों को अपनी आसान, व्यावहारिक और सुलभ सलाह देकर उन्हें अच्छा जीवन बनाने और जीने के लिए प्रोत्साहित करती है। उनके दर्द को कम करती है। उनके दर्द बिन्दुओं का विलोपन करती है। माता जी अपनी जिंदगी अपने भक्तों के लिए ही जी रही हैं। वे अपना ज्ञान सबसे साझा करती है। दूसरों को ज्ञान देने में उन्हें बड़ी खुशी होती है। हर एक को अपनी छोटी/मोटी किताब सहज ही भेंट करती है। मॉ की स्वाभाविक ममता, स्नेह और आत्मीयता उनके रोम–रोम से झरती है।

5. ज्ञानमती माता जी शालीन श्वेत एवं धवल वस्त्र धारण करने वाली शीर्षस्थ आर्यिका है। वे जैन सांस्कृतिक विश्व की थाट लीडर (Thought Leader) है। माता जी विभिन्न अवसरों पर अपनी सर्वोत्तम विशेषज्ञता और सर्वोत्कृष्ट सोच के उदाहरण प्रस्तुत करती है। वैचारिक नेतृत्व की ऊर्जा प्रदान करती है। माता जी की प्रामाणिकता और पारदर्शिता उनके प्रत्येक वचन ओर कर्म में दर्पण की भॉति प्रतिबिंबित होती है। प्रतिध्वनित होती है। अतीत और वर्तमान के अद्यावत ज्ञान पर आधारित उनकी प्रस्तुति प्रभावशाली होती है। विचारशील नेतृत्व के गुणों से ओतप्रोत माता जी ज्ञान और चारित्र के ठोस धरातल पर विराजमान रहते हुए जानने और करने के बीच आदर्श संतुलन स्थापित करती है। नवाचारों का सफलतापूर्वक प्रयोग करती है।

आपने श्रोताओं और दर्शकों में सफलतापूर्वक जीवन के शाश्वत मूल्यों की स्थापना करती हैं। उन्हें अपनी अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। हम माता जी की सतत प्रेरणा से अपने घर में बच्चों को सच्चरित्र बनाते हैं। बाहर अच्छे मित्रों से मिलते हैं। परोपकार की भावना को सुदृढ़ करते हैं।

6. माता जी का व्यक्तित्व अनंत संभावनाओं और अवसरों का अखण्ड और अजस्र स्रोत है। विविध विलक्षणताओं से ओत–प्रोत है। उन्होंने अपने सकारात्मक सत्कार्यो और सोच से अयोध्या में तत्कालीन विरोधी परिस्थितियों में भी अनुकूल परिस्थितियॉ निर्मित कर लीं थी। मंदिर निर्माण के लिए समुचित अवसर खोज लिए थे। ना उम्मीदी से उम्मीद की लौ, मद्धिम ही सही, सदैव जलाऐ रखी थी। अयोध्या में अपने जीवन के अस्तित्व के संकटों और संघर्षो के बीच भी प्रकाश की किरणों को खोज लिया। वे अपने जीवंत स्वर्णिम व्यक्तित्व के आधारभूत सप्त गुणों – आत्म विश्वास, संकल्प, संयम, समर्पण, समता, ममता और सहिष्णुता – को सदैव सशक्त करती रहती हैं और अपने संघस्थ सप्तार्यिकाओं, दर्शकों और श्रोताओं को इन गुणों से विभूषित करती रहती है।

7. यह उल्लेखनीय है कि आचार्य शांतिसागर जी महाराज की सल्लेखना के अवसर पर आचार्य विद्यानन्द जी क्षुल्लक के रूप में और माता ज्ञानमती जी क्षुल्लिका के रूप में उपस्थित रहे हैं। उनके सानिध्य में रहकर माता जी ने वरिष्ठतम आचार्य प्रवर शांतिसागर महाराज के सभी 28 मूलगुणों को अपने व्यक्तित्व में आत्मसात कर लिया है। **आचार्य विद्यासागर जी के गुरू आचार्य ज्ञानसागर ने आचार्य शिवसागर जी से दीक्षा ली और वे वर्ष 1959, 60 और 61 के चातुर्मास में ज्ञानमती जी के साथ रहे हैं। ज्ञानमती जी की मॉ माता रत्नमती जी की प्रेरणा से आचार्य विद्यासागर जी के पिता मल्लप्पा जी ने धर्मसागर जी से मुनि दीक्षा ली।**

8. पूज्य ज्ञानमती और चंदनामती जी सम्पूर्ण जैन जगत के लिए ही नहीं अपितु समग्र नारीजगत के लिए अपना प्रभावी आध्यात्मिक नेतृत्व प्रदान कर रही है। उन्होंने बालकवर्ग के लिए बाल विकास जैसी सरलतम लघु पुस्तकों की रचना की हैं। विद्वानों के लिए भी क्लिष्टतम अनेक महान ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद किया हैं। षटखण्डागम जैसे महान सिद्धांतग्रंथ की संस्कृत टीका कर रही हैं। राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों द्वारा जैनधर्म की कीर्तिपताका दिग्दिगंत फहरा रही है। उन्होंने चौबीस तीर्थंकरों की जन्मभूमियों के विकास, संरक्षण व संवर्द्धन का असाधारण कार्य बहुत कम समय में पूर्ण कर लिया हैं।

9. युग की प्रथम बालब्रह्मचारिणी के रूप में त्यागमार्ग में कदम बढ़ाने वाली इस लौह–बाला ने त्यागमयी जीवन के सात दशक पूर्ण कर लिए हैं। अपने इतने लंबे तपस्वी जीवन के एक–एक क्षण का सदुपयोग कर ज्ञान की बूँद–बूँद से जैन साहित्य का अपार सागर बना लिया है। सन् 1934 की शरदपूर्णिमा को टिकैतनगर (बाराबंकी, उ.प्र.) में पिता श्री छोटेलाल जी एवं माता मोहिनी देवी से जन्मी प्रथम कन्यारत्न मैना ने 18 वर्ष की आयु में सन् 1952 में गृह त्याग कर आजन्म ब्रह्मचर्य एवं सप्तम प्रतिमा के व्रत धारण किए। पुनः 1953 में क्षुल्लिका दीक्षा तथा 1956 में आर्यिका दीक्षा धारण कर ज्ञानमती नाम प्राप्त किया। उनके शरीर की प्रत्येक कोशिका में व्याप्त अनुपमेय अपार शक्ति, प्रतिक्षण स्व/पर कल्याण में उपयोग की जा रही है। अटूट परिश्रम के साथ जैन संस्कृति के महायज्ञ में समर्पित की जा रही हैं। वे अपने चरण कमलों से बुन्देलखण्ड की धरती को पवित्र कर रही है। आचार्य कुन्दकुन्द एवं अकलंक देव के अनेक उदाहरण प्रस्तुत कर रही है।

10. सामान्यतः संत अति आत्ममुग्धता से ग्रसित हो जाते है। उनकी सोच उनके व्यक्तित्व के इर्द–गिर्द ही घूमने लगती है। बड़े होते ही स्वयं को सर्वश्रेष्ठ समझने लगते है। अपनी ही प्रशंसा सुनने के लिए आतुर होने लगते है। अपने भक्तों, श्रोताओं और दर्शको की परवाह करना छोड़ देते है। अपने निकटस्थ शिष्यों से भी स्नेहपूर्ण व्यवहार करने में संकोच करने लगते है। आत्ममुग्धता, अभिमान और घमण्ड की सर्वोच्च सीढ़ियों पर बैठ जाते है। आधारहीन तथा अविवेकपूर्ण आत्मविश्वास, स्वाभिमान और गर्व से स्वयं को महिमा मण्डित करने लगते हैं। अपेक्षित सम्मान नहीं मिलने पर उग्र हो जाते हैं। अपने आसपास के लोगों को कष्ट देने लगते है। उन पर पूरा नियंत्रण करने लगते हैं। दूसरों की भावनाओं की अवहेलना करने लगते हैं। उनमें कमियॉ निकालने लगते है। उनका मजाक उड़ाने लगते हैं। वे अपने आसपास केवल ऐसी भीड़ जुटाने लगते है जो सदैव उनकी तारीफ करती रहे। वे कभी अपने दुर्गुणों का विश्लेषण नहीं करते है। अतः उन्हें अपने दुर्गुणों का आत्मबोध नहीं हो पाता है। सामान्य व्यक्तित्व के इन विविध विकारों की चर्चा यहॉ अप्रासांगिक सी भले प्रतीत हो किन्तु इन विकारों को विनष्ट करने और संबंधित सद्गुणों की प्रजनन की प्रक्रिया को बहुगुणित करने तथा प्रोत्साहित करने की दृष्टि से अपेक्षित है। व्यक्तित्व के इन विविध विकारों से पूर्णतः विमुक्त माता जी का संघ और संघस्थ प्रत्येक व्यक्ति अपनी आध्यात्मिक जागृति के पथ पर सदैव अग्रसर है।

(9) प्रयागराज से नैनागिरि और नैनागिरि से अयोध्या

— सुरेश जैन (आई.ए.एस.)

1. परम पूज्य माता जी अयोध्या और प्रयागराज में जैन सांस्कृतिक विकास की अपार संभावनाओं को सदैव सफलतम परिणामों में बदलने के लिए सदैव कटिबद्ध रही है। सृजन की संभावना को परिणाम में बदलने के लिए संकल्पबद्ध रही है। सोमवती और मौनी अमावस्या के शुभ संयोग सोमवार 4 फरवरी, 2019 को प्रयागराज दुनिया का सबसे ज्यादा आबादी वाला शहर बन गया। इस दिन पॉच करोड़ लोगों ने कुंभ मेला के अवसर पर संगम में स्नान किया। देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा श्री राम जन्मभूमि मंदिर का शिलान्यास किया गया। इस अवसर पर पीठाधीश महास्वामी श्री रवीन्द्रकीर्ति जी भी उपस्थित थे। 161 फीट ऊँचा यह मंदिर श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र द्वारा निर्माण किया जा रहा है। अब अयोध्या भारतीय संस्कृति का प्रमुख राष्ट्रीय केन्द्र बन गया है।
2. ज्योति पर्व, 2020 के दिन अवधपुरी में प्रकाश पर्व का आनन्द लिया। यह हमारा ज्योतिर्मय इतिहास बन गया है। वस्तुतः यह प्रकाश पर्व भगवान राम के पूर्वज भगवान आदिनाथ का जयघोष था। इनमें से अधिकांश व्यक्तियों ने माता जी की सुदूर दृष्टि के परिणाम स्वरूप प्रयागराज में सुविकसित भगवान ऋषभदेव तपस्थली और ज्ञानस्थली के दर्शन कर जैन संस्कृति की जानकारी प्राप्त की। आदिब्रह्मा भगवान ऋषभदेव और उनके जैन दर्शन की चर्चा भारत के कोने—कोने और पूरे विश्व में पुनः पहुँची।
3. यह रेखांकित करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि माता जी की विशेष प्रेरणा से हमने और विमला जी ने मार्च, 2019 के तृतीय सप्ताह में प्रयागराज और अयोध्या की यात्रा की। अयोध्या में इन्द्र—इन्द्राणी बनकर भगवान ऋषभनाथ का महामस्तकाभिषेक करने और माता जी के कर—कमलों से रजत कलश प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। माता जी से विस्तृत चर्चा करने का अवसर मिला।
4. अयोध्या और प्रयागराज में जैन संस्कृति के विशाल प्रकाश स्तंभों की संस्थापिका, असाधारण ओज, ऊर्जा और अनभिनेयता के व्यक्तित्व की धनी — ज्ञानमती मॉ को विनम्रता पूर्वक हम प्रणाम करते हैं। कुछ क्षण वंदामि कर बैठ जाते हैं। हम शीघ्र ही पाते हैं कि उनके स्नेह की बूंदों से हम शीतल होने लगते है। उनकी आत्मीय ऊष्मा हमारे शरीर और मन में प्रवेश करने लगती हैं। उनके व्यक्तित्व की आत्मीय तरलता और मार्मिक संवेदना अपने नेह से हमें भिगोंने लगती है। उनके मुखमण्डल से झरती

दीपशिखा हमें धीरे–धीरे प्रकाशित करने लगती है। हमारे व्यक्तित्व को अंदर और बाहर से जगमगाने लगती है। आत्मीयता की ऑच में हमें नहलाने लगती है। हम अपनी जड़ों की ओर दौड़ने लगते है। हमारा जीवन स्तर ऊँचा उठने लगता है। माता जी हमारा एक–एक विनम्र प्रणाम अपनी कई गुनी मीठी मुस्कराहट और मधुर वाणी से हमें लौटा देती हैं। अपने भक्त के लिए सहज ही खुशी की शीतल छाया बन जाती है।

5. ज्ञानमती माता जी ने अपनी प्रज्ञा को जागृत कर सरस्वती का स्वरूप प्राप्त कर लिया है। वे छोटे से छोटे ग्राम और नगर में जाकर बुन्देलखण्ड के जैन मंदिरों और तीर्थो के दर्शन कर रही है। सामान्य जन से प्यार से मिल रही है। बुन्देलखण्ड के सभी व्यक्तियों ने मिल–जुलकर प्रत्येक ग्राम और नगर में उनकी आगवानी की। आरती उतारी। उन्हें भरपूर सम्मान दिया। माता जी ने अपनी इस यात्रा में जन–जन के व्यक्तित्व को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। आध्यात्मिक एकता और समरसता के उम्दा बीज बोऐ हैं। अपनी ऊर्जा और ऊष्मा से जन–जन का आध्यात्मिक पुनर्जागरण किया है।

6. चंदनामती जी हमें संसार को पहचानने की सार्मथ्य और शक्ति प्रदान करती है। सफल जीवन के लिए अनुपम मंत्र देतीं है। हमारे आत्मदीप से झरते प्रकाश से हमारा साक्षात्कार कराती है। हमारी घनेरी रात को ज्योति का परिधान ओढ़ने के लिए विवश कर देती है। बेहद सटीक, सार्थक और रोचक ढंग से जीवन प्रबंधन के सूत्र बताती है। सरलता पूर्वक, व्यावहारिक जीवन के पाठ पढ़ाती है। स्नेहपूर्वक समझाती है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे आधारभूत जीवन मूल्यों को रेखांकित करतीं हुई मुक्ति पथ का अमूल्य ज्ञान प्रदान करतीं हैं। शरीर, वाणी और कर्म में समन्वय स्थापित करने की सीख देतीं हैं। बालिकाओं को सही संस्कार देतीं हैं। उनमें सत्कर्म करने की भावना विकसित करती हैं।

7. विन्ध्याचल की पर्वत गिरियों (श्रेणियों) की प्रमुख गिरि (पहाड़ी) नैनागिरि में स्थित सिद्ध शिला को प्रणाम करते हुए माता जी ने वरदत्त मुनिवर के लघुभ्राता आचार्य शांतिसागर जी द्वारा 91 वर्ष पूर्व की गई नैनागिरि यात्रा का श्रद्धा पूर्वक स्मरण किया। माता जी ने सिद्धशिला के समीप स्थित सिद्धों के अकृत्रिम चरण चिन्हों के दर्शन किए। वरदत्तादि पॉच सिंद्धों को निर्वाण लाडू समर्पित किए। सिद्ध शिला पर बैठकर ध्यान किया और सामायिक की। हम सबको भी ध्यान कराया। इसके पूर्व ध्यान केन्द्र का उद्घाटन करते हुए हमें सतत ध्यान करने की प्रेरणा प्रदान की। सम्यक्ज्ञान की संप्रेरिका और अनभिनेय व्यक्तित्व की धनी युगल माता जी को शत–शत वंदामि।

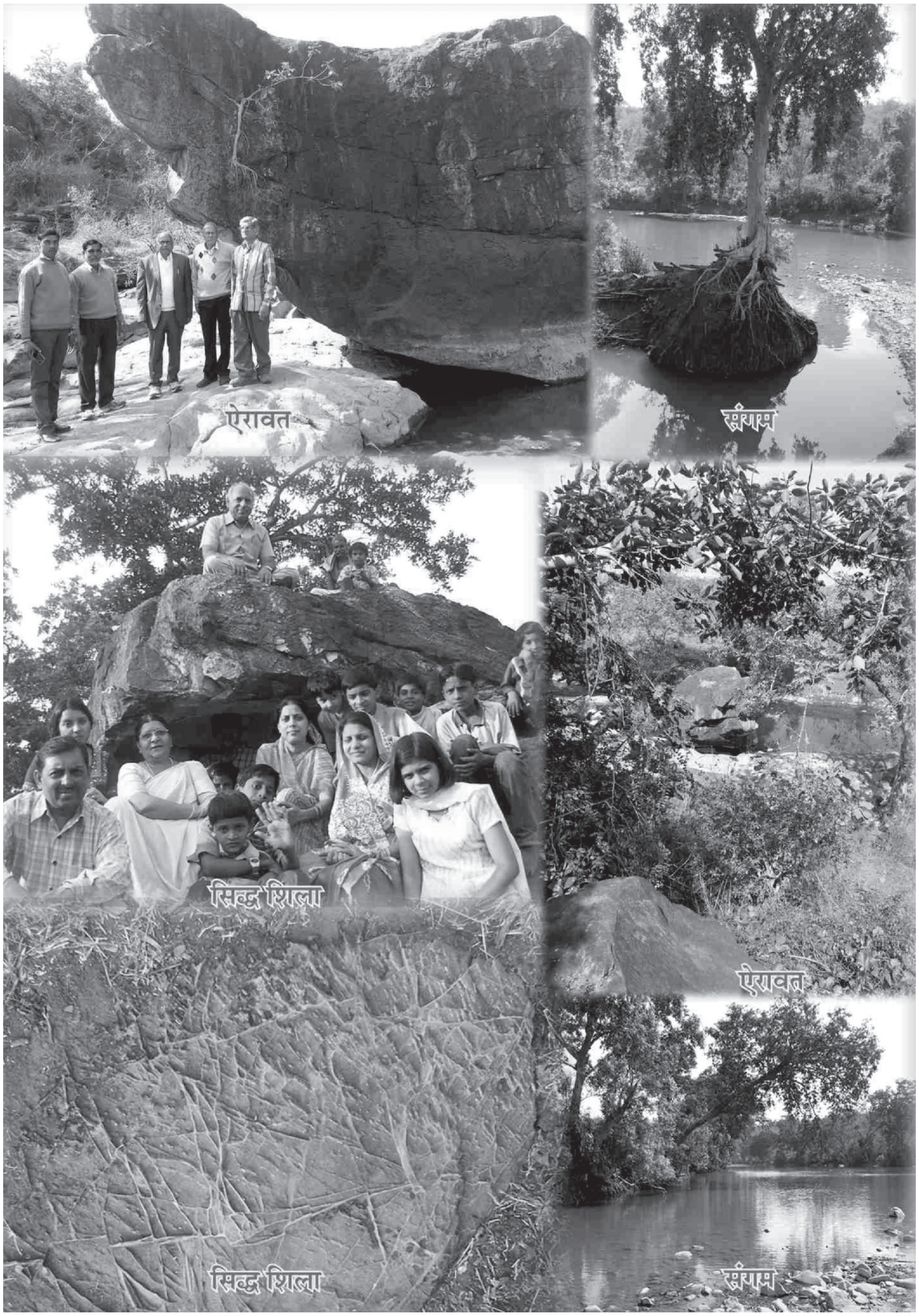
ऐरावत
संगम
छिद्र शिला
ऐरावत
छिद्र शिला
संगम

(10) 'अहिंसा से शांति एवं पर्यावरण शुद्धि' संगोष्ठी, 15 जून, 2020 में प्रस्तुत आलेख

सानिध्य – परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माता जी

1. हिंसा, एकांतवाद और प्राकृतिक प्रदूषण की भौतिक एवं मानसिक दुष्प्रवृत्तियों ने विश्व को तृतीय विश्वयुद्ध की कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। हिंसा से अशांति बढ़ रही है। साधनों की अशुद्धि से प्रदूषण विकराल रूप ले रहा है। इन विषम परिस्थितियों में अहिंसा और पर्यावरण शुद्धि से ही हमें सतत शांति प्राप्त हो सकती है। अहिंसा और पर्यावरण शुद्धि पर ही शांति की मंजिल टिकी हुई है। अहिंसा–भौतिक हिंसा, अनेकांत–वैचारिक हिंसा और पर्यावरण शुद्धि – ही प्राकृतिक हिंसा से हमें बचा सकते है। अहिंसा भारतीय संस्कृति की आधारभूमि है। अहिंसा सभी धर्मो और नैतिकताओं की जननी है। अहिंसक जीवन विश्वधर्म का नीति निर्देशक तत्व एवं उदात्त जीवन मूल्य का आदर्श है।
2. जैन संस्कृति के प्रमुख आचार्य उमास्वामी ने दो हजार वर्ष पूर्व प्रमत्त योगात् प्राणव्यय रोपणं हिंसा और परस्परोपग्रहो जीवानाम् जैसे शाश्वत सिद्धांतो की घोषणा कर हमें अहिंसा और पर्यावरण संरक्षण के मूल सूत्र प्रदान किए है। आचार्य अमितगति ने जन–जन के विकास के लिए अहिंसा की समाज और परिवार के लिए व्यावहारिक प्रक्रिया निर्धारित करते हुए बताया है कि हम अपने जीवन में सत्वेषु मैत्री की अवधारणा को आत्मसात करें।
3. जैन संस्कृति ने पूरे विश्व को सर्वोदय के सिद्धांत का महत्त्वपूर्ण अवदान दिया है। सर्वोदय और लोकतंत्र की सफलता अहिंसा के बिना संभव नहीं है। जैन दर्शन – जीवो जीवस्य जीवनम् या जीवो जीवस्य भोजनम् – की अवधारणा की स्वीकृति नहीं देता है। अहिंसा परमोधर्मः ही समेकित भारतीय संस्कृति का मूलभूत सिद्धांत है। अतः भारत सरकार के प्रयासों से संयुक्त राष्ट्र संघ ने विश्व के सभी देशों के लिए वर्ष 2007 में अहिंसा दिवस घोषित कर अहिंसा की विश्वव्यापी महत्ता स्थापित की है। हम जैन संस्कृति के इन चिरतंन और आधारभूत सिद्धांतो को अपने जीवन में यथासंभव उतार कर पूरी दुनिया के समक्ष ठोस उदाहरण प्रस्तुत करें।
4. जैन धर्म अहिंसा और पर्यावरण के संरक्षण एवं पोषण के लिए विरली किन्तु ठोस सैद्धांतिक शक्तिपीठ प्रदान करता है। पर्यावरण सरंक्षण में धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं का अत्यधिक योगदान है, अतः वैज्ञानिक कृत्यों के साथ–साथ आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आधार पर पर्यावरण संबंधी सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार एवं विवेकपूर्ण प्राचीन मान्यताओं को पुनर्जीवित करना आवश्यक है।

5. जैन धर्म प्रकृति और मानवीय जीवन के बीच अद्भुत साम्य की घोषणा करते हुए यह स्थापित करता है कि प्रकृति और प्राणी चेतन है। दोनों जन्म लेते हैं, भोजन करते हैं, बढ़ते हैं और छिन्न–भिन्न होने पर दुखी होते हैं। जैन संस्कृति अहिंसा पर आधारित है। अहिंसा विश्व युद्ध के लिए भी प्रभावी कवच प्रदान करती है। अहिंसा के बिना किसी भी प्राणी का अस्तित्व बनाए रखना संभव नहीं है। जैन संस्कृति ने पर्यावरण के सभी घटको – पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, वनस्पति कीड़े–मकोड़े, पशु पक्षी एवं मानवीय समाज – के संरक्षण के लिए असाधारण एवं अद्भुत प्रावधान किए है। पर्यावरण संरक्षण के लिए भगवान महावीर ने 2500 वर्ष पूर्व **जिओ और जीने दो, परस्परोपग्रहो जीवानाम्** एवं **जीवाणां रक्खणों धम्मो** के शाश्वत सिद्धांत हमें प्रदान किए है।

6. पूज्य ज्ञानमती जी और चंदनामती जी अपने जीवन में इको–जैनिज्म एवं एप्लाइड जैनिज्म के सिद्धान्तों का आत्मसात करती है। अपने व्यक्तित्व से उनका अभिव्यक्तिकरण करती हैं। वे अपने साथ सिर्फ काष्ठ निर्मित कमण्डलु और मोरपंख से बनी पिच्छी रखती हैं। ये दोनो उपकरण पर्यावरण सरंक्षण एवं आत्मोन्नति के प्रतीक हैं। ये ऐसी सामग्री से निर्मित हैं, जो स्वयमेव जीवों के द्वारा प्राकृतिक रूप से छोड़ी गई है। वे कमण्डलु के जल का दैनिक आवश्यकता हेतु बड़ी मितव्ययता से उपयोग करती हैं। कमण्डलु मितव्ययिता का आदर्श प्रतीक है। कमण्डलु में पानी भरने का मुँह बड़ा होता है किन्तु पानी निकालने की नलिका बहुत पतली होती है। दैनिक क्रियाओं के दौरान पिच्छी के द्वारा वे सूक्ष्म जीवों की प्राणरक्षा करती है। इस तरह प्राकृतिक स्त्रोतों की मितव्ययता और प्राणी रक्षा का संदेश उनके जीवन व्यवहार से सदैव उद्घोषित होता रहता है।

7. चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमाओं पर अंकित चिन्ह प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण के मूलभूत तत्वों एवं संदेशों के संवाहक हैं। ये चिन्ह संबंधित तीर्थंकर के जीवनवृत्तों एवं उनकी समकालीन प्रवृत्तियों पर आधारित हैं। जैन तीर्थंकरों का प्राकृतिक सम्पदा एवं वन्य प्राणियों के सरंक्षण में महत्वपूर्ण योगदान है। तीर्थंकर चिन्ह हमें पर्यावरण संरक्षण की प्रभावी प्रेरणा एवं अनुभूति प्रदान करते है। तीर्थंकर यह जानते थें कि मानव प्रकृति पर निर्भर है, अतएव उन्होंने प्रकृति, वन्य पशु एवं वनस्पति जगत के प्रतिनिधि के रूप में महत्वपूर्ण विभिन्न प्रतीक चिन्ह स्वीकार कर उन्हें स्थायी महत्व प्रदान किया है।

8. प्रत्येक जैन तीर्थंकर को विशुद्ध ज्ञान (केवल ज्ञान) की प्राप्ति किसी विशेष वृक्ष की छाया में प्राप्त हुई। जैन साहित्य में इन वृक्षों को तीर्थंकर वृक्ष या केवली वृक्ष कहते

है। भगवान आदिनाथ से लेकर महावीर पर्यन्त सभी तीर्थंकरो के वृक्ष पर्यावरण सरंक्षण के जनक एवं संपोषक है।

9. जैन तीर्थंकर पर्यावरण और प्रकृति के विशेषज्ञ हैं। तीर्थंकर चिन्ह–समूह और तीर्थंकर वृक्ष समूह अतीत, वर्तमान तथा भविष्य के पर्यावरण की अनुभूति का प्रवाही स्त्रोत है। चिन्हों और वृक्षों की यह चौबीसी प्रकृति, वनस्पति, पशु एवं पक्षी जगत की महत्वपूर्ण अभय–वाटिका है। इस अभय–वाटिका से शान्ति का शाश्वत निर्झर प्रवाहित हो रहा है।

10. मनुष्य की सामान्य इच्छाओं की पूर्ति प्रकृति द्वारा बिना किसी कठिनाई के पूरी की जा सकती है, किन्तु जब इच्छा बहुगुणित होकर कलुषित हो जाती है, तब उसे पूरी करना प्रकृति के लिए कठिन हो जाता है। मनुष्य की यह बहुगुणित इच्छा ही प्राकृतिक संकटों की जननी है। ऐसी इच्छाओं को नियमित करने के लिए जैन संस्कृति ने हमें संयम का संदेश दिया है। जैन आचार्य कहते हैं कि हम प्रयत्न पूर्वक चलें, प्रयत्न पूर्वक ठहरें, प्रयत्न पूर्वक सोऐं, प्रयत्न पूर्वक बैठे, प्रयत्न पूर्वक बोलें और प्रयत्न पूर्वक भोजन करें। हम अपने प्राकृतिक धर्म का निर्वाह करें। अपने पर्यावरण को सम्हालें। अपने परिवेश को शुद्ध रखें और सब मिलकर अपनी धरा को सजाऐं।

11. जैन संस्कृति द्वारा प्रसारित और प्रचारित शाकाहार बड़ी सीमा तक प्राकृतिक और अहिंसक आहार है। शाकाहार मांसाहार से बेहतर है। पोषक है। स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है। प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण को संतुलित रखता है। वर्तमान में यह दुखद है कि हमारे अधिकांश कृषक कीड़े मारने का संकल्प कर कीटनाशकों का अंधाधुंध उपयोग करते है। परिणामतः अब हमारा शाकाहार अब पूर्णतः अहिंसक आहार नहीं रह गया है। इस बिन्दु पर नई सोच और नई शुरूआत करने का समय आ गया है।

12. गत शताब्दि के तीन वायरस की भॉति कोविड–19 ने पशु–पक्षियों के माध्यम से मानव शरीर में प्रवेश कर लिया है। इसका कारण यह कि अनेक देशों ने इन पशु–पक्षियों को अपने भोजन का हिस्सा बना लिया है। इस संदर्भ में यह तथ्य विचारणीय है कि हमारे किसान के पास औसत भूमि ढाई एकड़ है। जबकि चीन में 2 एकड़ है। हमारी तुलना में चीन में गेहॅू और धान का प्रति एकड़ उत्पादन दो से तीन गुना अधिक होता है। चीन का यह उदाहरण देकर हम अपने कृषकों को उत्तम खेती और बेहतर उत्पादकता के लिए प्रेरित करें। अपनी जमीन से प्यार करें, जिससे हमें अहिंसक और आर्गेनिक / जैविक खाद्यान्न प्राप्त हो सकें।

13. अपने भोजन में फायबर युक्त वस्तुओं को खाऐं। हरी सब्जियॉ, फल, दालें, नट्स और बीज अधिक से अधिक खाऐं। अपने आसपास होने वाले मौसमी फल, सब्जी और अनाज का उपयोग करें। अपने परिवार के लिए अपने घर में ही स्वयं सब्जियॉ उगाऐं। घर में ही किचिन गार्डन बनाऐं। सतत परिश्रम पूर्वक सार्थक जीवन जिऐं। आत्म निर्भर बनने के लिए स्थाई और टिकाऊ उपाय अपनाऐं। प्रकृति के निकट जाऐं। जल, जंगल और जमीन का संरक्षण करें। आप सभी श्रोताओं से आग्रह है कि, इस प्रकार के उपाय अपनाकर शाकाहार को पूर्णतः अहिंसक बनाये और पर्यावरण एवं प्रकृति के संरक्षण के लिए अपना सतत योगदान दें।

14. अंत में हम पुनः ज्ञानमती माता जी को वंदामि करते हैं। वे हमें चारित्रिक और नैतिक रूप से अधिक सम्पन्न और समृद्ध कर रही है। हमारे जीवन और चरित्र का निर्माण कर रही है। हमारे व्यक्तित्व में अनंत ऊर्जा, असीमित उत्साह और अपरिमित धैर्य का विकास कर रही है। सार्वभौमिक कल्याण के लिए अपने ज्ञान और अनुभव का उपयोग कर रही है। उनके सानिध्य में आयोजित इस संगोष्ठी में भाग लेकर हम उनके प्रति कृतज्ञ है।

(11) भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद द्वारा आयोजित वेबिनार में प्रमुख वक्ता के रूप में संबोधन

17 अगस्त, 2020 दोपहर 4 बजे

1. परम पूज्य ज्ञानमती माता जी एवं चन्दनामती माता जी भगवान ऋषभदेव की पुत्री ब्राह्मी और सुन्दरी की भॉति अपना आध्यात्मिक नेतृत्व प्रदान करते हुए जैन संस्कृति और जैन समाज की अनुपम सेवा कर रही है। हम सब 87 दिन तक बड़ी माता जी की 87 वीं जन्म जयंति के उपलक्ष्य में उन्हें प्रतिदिन विनयांजलि समर्पित कर रहे है। विनयांजलि सभा के सभी आयोजकों और भागीदारों को हार्दिक साधुवाद। माता जी के इस विशाल सांस्कृतिक रथ का पीठाधीश स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी सफलतम संचालन कर रहे है। उनकी प्रत्येक योजना को डॉ. जीवन प्रकाश जी कार्यान्वित कर रहे है। भाई विजय जैन, प्रतिष्ठाचार्य इन योजनाओं के कार्यान्वयन में अपना सराहनीय सहयोग दे रहे है।
2. अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद के अध्यक्ष भाई जीवन प्रकाश जी और परिषद के सभी पदाधिकारियों तथा सदस्यों ने हमें परिषद के संरक्षक के पद पर आसीन कर सम्मानित किया है। हम आप सभी के प्रति कृतज्ञ है और आप सबके लिए अपनी मंगलकामनाऐं संप्रेषित करते है। भाई जीवन जी ने आई.ए.एस. की तैयारी के इच्छुक छात्रों के जीवन को प्रकाशित करने के लिए यह वेबिनार आयोजित कर अत्यधिक सराहनीय कार्य किया है। इस वेबिनार के अध्यक्ष हमारे अभिन्न मित्र सुप्रसिद्ध तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री सुरेश जी का मैं स्वागत करता हूॅ। उन्होंने शैक्षणिक जगत में अनेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं। उन्हें बधाई।
3. प्रधान आयकर महानिदेशक श्री आशु जैन, भारत सरकार के वरिष्ठतम राजस्व अधिकारी रहे है। उनकी पत्नि श्रीमती अनीता बी. जैन, वरिष्ठतम आई.ए.एस. अधिकारी है। भाई आशु जी के पिता श्री धर्मवीर जैन उत्तरप्रदेश सरकार के इंजीनियर इन चीफ रहे हैं। उन्होंने जैन तीर्थों के चतुर्मुखी विकास में अपनी बहुमूल्य सेवाऐं प्रदान की है। वे अभी तक गरीब छात्रों को डेढ़ करोड़ से अधिक रूपयों की छात्रवृत्ति प्रदान कर चुके हैं। उन्होंने जैन तीर्थ नैनागिरि प्रभृति देश के अनेक तीर्थो को वित्तीय सहयोग प्रदान किया है। श्री आशु जी और उनकी धर्मपत्नि श्रीमती अनीता जी से हमारा निवेदन है कि वे हमारे छात्रों को इसी प्रकार का सहयोग और निर्देशन सदैव प्रदान करते रहें। श्री पराग जैन महाराष्ट्र केडर के वरिष्ठ आई.ए.एस.

अधिकारी हैं। वे जैन तीर्थो को अपना सहयोग देने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। उनसे हमें बड़ी अपेक्षाऐं है। उनसे विनम्र आग्रह है कि वे हमारे छात्रों को इसी भॉति अपना व्यावहारिक मार्गदर्शन देते रहें। उन्हें पदोन्नत होने के लिए हार्दिक बधाई।

3. जबलपुर में स्थित अखिल भारतवर्षीय प्रशासकीय प्रशिक्षण संस्थान का संस्थापन और 10 वर्षो तक संचालन करने का हमें अवसर मिला है। आचार्य नयपद्मसागर सूरीश्वर के नेतृत्व में संस्थापित जीतो का उसके गर्भकाल से ही आकल्पन एवं संस्थापन में सक्रिय सहयोग देने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ है। वर्तमान में हम उपाध्याय गुप्तिसागर जी महाराज के द्वारा दिल्ली में स्थापित कामयाब संस्था के माध्यम से गत तीन वर्षो से प्रतिवर्ष 30 छात्रों को प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए प्रशिक्षण दे रहे हैं।

4. ज्ञानमती माता जी पत्थर या धातु की मूर्तियों को संस्कारित करके भगवान बना देतीं है। अपनी युवा प्रतिभा को संस्कारित कर उन्हें सच्चा इंसान बना देती है। माता जी की आध्यात्मिक निष्ठा, सतत तपस्या, असाधारण विद्वत्ता एवं सामाजिक कल्याण की भावना उन्हें शैक्षणिक जगत में महानता और अमरता की ओर ले जा रही है। माता जी की भावना है कि हमारे छात्र अपने व्यक्तित्व में आधुनिक दृष्टि, स्वस्थ विचार और उत्कृष्ट जीवन मूल्यों को आत्मसात करें। अपनी सर्वतोमुखी प्रगति करें। वे अच्छी संपदा अर्जित करने के साथ–साथ जैन संस्कृति का सार गृहण करें। अपने जीवन में शाश्वत सुख और संतोष प्राप्त करें। Param Poojya Gyan Mati Mata Ji intends to direct every resource at her command, every financial means at her disposal, every tool in her store and all her social and political influence to the all-round development of you all.

5. छात्र बंधुओ ! आप सभी से मिलकर हमें अपार प्रसन्नता हुई है। हम आपको कुछ बेहतर बनने की प्रेरणा देना चाहते है। जीवन में सफलता प्राप्त करने के मंगल सूत्र देना चाहते है। हम चाहते है कि आप अपनी क्षमता से बेहतर कार्य करें। आप अपनी उपलब्धियों एवं सफलताओं को ही आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा स्त्रोत बनाऐं। अपने काम में सदैव सुधार लाकर अपना ही रिकार्ड तोड़ दें। लगातार तरक्की करते रहें। आप अपनी इस उपलब्धि को प्रथम सीढ़ी मानकर आगे बढ़ते रहें। आप अपनी ज्ञान की धार को सतत रूप से तेज करते रहे। जीवन की लड़ाई हमेशा तेज और मजबूत व्यक्ति ही नहीं जीतता बल्कि वहीं जीतता है जिसे यकीन है कि वह जीतेगा। यही विश्वास आज हम आपको सौंप रहे है। ज्ञान के बिन्दु और चन्दन की सुगंध के साथ सौंप रहें है।

6. हमारे राष्ट्र एवं समाज का सर्वतोमुखी विकास हमारे कर्तव्यनिष्ठ सुसंस्कृत एवं प्रतिभासंपन्न छात्रों पर ही आधारित है। यह हमारा महत्वपूर्ण सामाजिक कर्तव्य एवं मानवीय उत्तरदायित्व है कि अपने छात्रों को सतत रूप से प्रेरित करें जिससे कि वे अपना सर्वतोमुखी विकास कर सकें और राष्ट्र के कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बन सकें। विनम्रतापूर्वक हम आज इसी कर्तव्य का पालन कर रहे है।

7- My Dear friends! You must always improve your own performance. You must compete against your own capacities. We acknowledge and appreciate your achievement, encourage your spirits, develop your morale and solidify your positive self-esteem.

8. Successful life is based on positive attitude. You have demonstrated an attitude to win and we wish you to continue to win again and again. Your performance must be extra ordinary in every walk of your life. Poojya Gyanmati Ji and Chandanamati Mata Ji provide their most effective Ashirvad for you all who determine to achieve excellent results.

9. We understand that a few are born with positive attitude and few acquire the positive attitude. Let us assure you that the Ashirvad of all our spiritual mothers shall thrust upon you positive attitude to win, to succeed and to allow your emotions to run high.

10. You should be persistent, calm and resolute in your endeavour. Your present achievement should turn to resolution for constant achievement in future. We extend our heartfelt warm welcome and hospitality to you all.

11. My dears ! always think big, integrate ethics and integrity with your profession. Articulate your mission and longer picture of your life in your routine work and combine formidable strength of Jain culture with your efficiency and thinking. Our cultural factor must always distinguish you. You must aspire and perspire for No. I position in your profession and life.

12. You have sufficient ability and intelligence to succeed in life. Now you must develop relevant qualities such as desire, direction, dedication and discipline to succeed. Continuous positive education leads to positive thinking. Maintain a good store of Positive Thoughts and Good Attitudes. Positive thinkers are always winners. They recognize their limitations but focus on their strengths. Negative thinkers are losers. They recognize their strengths but focus on their weaknesses. We should always endeavour to increase our spiritual quotient and never try to decrease it by our insensitivities and self-centeredness.

13. Poojya Gyanmati Mata Ji is an intellectual genius and nearest to our mother earth. She has mass magnetic appeal. She is deeply committed to your personal, professional and ethical growth. She provides us a safety net and security blanket by his constant love and affection. She increases our determination to succeed. She strengthens our willingness to devote our time, energy and effort necessary to achieve excellent success. She is a great saraswati, philosopher, humanist and powerful social activist. She inspires and helps us to realize our true potential. She motivates us to revaluate our attitudes and convert them in positive attitudes. She helps people to move on the path of personal growth and spiritual achievement.

14. पूज्य ज्ञानमती माता जी एवं चंदनामती माता जी के सानिध्य में हमें सदैव अपनेपन का अहसास होता है। पूज्य चंदनामती माता जी अपनी अद्‌भुत प्रवचन शैली के माध्यम से आध्यात्मिक चेतना को सामाजिक/शैक्षणिक सरोकारों से जोड़ते हुए शैक्षणिक जगत के आप जैसे उदीयमान नक्षत्रों को अत्यधिक प्रभावित करती है। अत्यंत भाव विह्‌वल होकर वे भावी जीवन में सर्वोच्च सफलता प्राप्त करने हेतु आपको अपना स्नेह और आशीर्वाद प्रदान करती हैं। गोवत्स की भॉति अपनी मांगलिक प्रीति भेंट करती है। हम सब अनुपम गुणों से सुशोभित उनके आंतरिक व्यक्तित्व की ओर सहज ही आकर्षित होते है। उनके प्रति अपनी पूर्ण श्रद्धा प्रकट करते हैं। उनके समक्ष समर्पित हो जाते है।

15. प्रत्येक क्षण मौलिक चिंतन कर हम अपने परिवेश को सदैव अधिकाधिक परिष्कृत और परिमार्जित करते रहें। न्यूटन ने एक सेव के नीचे गिरने की साधारण क्रिया में स्वयं को असाधारण ऊँचाई तक पहुॅचाने का मार्ग खोज लिया था। अतः हम अपनी अन्वेषक दृष्टि को विकसित करें। नई संभावनाओं पर सतत विचार करें। गलत मान्यताओं और रूग्ण परंपराओं से दूर रहें। अपने व्यक्तित्व के विकास में पारंपरिक संस्कारों का विवेक पूर्वक सदुपयोग करें। समाज और परिवार के प्रति अपना दायित्व बोध जीवित रखें। संस्कृति और परंपराओं की धरोहर को संजोकर रखने में अग्रणी रहें। पारस्परिक आत्मीय सहयोग और निस्वार्थ सेवा की भावना को विकसित करें। अच्छा सोचे, अच्छा बोले और अच्छा करें।

16. My dear young friends! You must have strong interpersonal skills and well-developed presentation skills. You must have a dynamic and adaptable personality with aptitude towards resolving problems and building consensus. You must develop a strong commitment to your academics, social works and

extracurricular activities and maintain a fine balance among all of them. You should have strong ability to lead and interact at all levels of international, multicultural and multilingual organizations.

17. You must widen your perspective, develop your cultural awareness, hone your social skills and thus empower your entire personality.

18. इस अवसर पर हमने अपने प्रतिभाशाली छात्रों के व्यक्तित्व में आत्मविश्वास का छोटा सा पौधा रोपित किया है। उनमें परस्पर–आत्मीयता और निस्वार्थ–सेवा की भावना विकसित करने का पावन प्रयास किया है। उनमें अच्छा सोचने, अच्छा करने और सादगी से रहने की प्रवृत्ति विकसित करने की विनम्र कोशिश की है। नैनागिरि में विराजमान भगवान पार्श्वनाथ से हमारी प्रार्थना है कि इन छात्रों का मंगलपथ सदैव आलोकित होता रहे और वे सरलता से विकास के उच्चतम सोपानों पर आगे बढ़ते रहें।

सुरेश जैन (I.A.S.)
30, निशात कॉलोनी,
भोपाल (म.प्र.)

(12) पूज्य ज्ञानमती माता जी की नैनागिरि यात्रा

भारत के राष्ट्रपति माननीय श्री रामनाथ जी कोविद ने 22 अक्टूबर 2018 को ऋषभदेवपुरम में स्टेच्यु ऑफ अहिंसा के दर्शन किए। माता जी के चरण स्पर्श कर **विश्व शांति अहिंसा सम्मेलन** का उद्घाटन किया। ज्ञानमती जी ने अपने द्वारा ऋषभदेव पुरम में निर्मित भगवान ऋषभदेव से अश्रुपूरित नेत्रों से भगवान ऋषभदेव विश्वशांति वर्ष में 10 नवम्बर, 2018 को विदा लेकर भगवान पार्श्वनाथ के समवसरण स्थल नैनागिरि की ओर मंगल विहार किया। उन्होंने 5 दिसंबर, 2018 को इन्दौर में प्रवेश किया और भोपाल–सागर–दमोह–कुण्डलपुर– बक्स्वाहा–बम्हौरी मार्ग से होते हुए 19 जनवरी, 2019 को नैनागिरि में प्रवेश किया और अपना त्रिदिवसीय प्रवास (19, 20 एवं 21 जनवरी, 2019) किया। 21 जनवरी को प्रातः नैनागिरि में निर्माणाधीन सिद्ध मंदिर को शीघ्र पूर्ण करने के लिए पदाधिकारियों, प्रबंधकों और पुजारियों को अपना मंगल आशीर्वाद दिया और सहस्र वर्ष प्राचीन भगवान ऋषभदेव की सुंदरतम प्रतिमा के दर्शन कर दलपतपुर के लिए प्रस्थान किया।

2. भगवान ऋषभदेव की सर्वोच्च प्रतिमा के दर्शन कर ऋषभदेवपुरम (मांगीतुंगी) महाराष्ट्र से भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या की लंबी सांस्कृतिक यात्रा करते हुए जनवरी की कड़कती ठण्ड में पूज्य ज्ञानमती माता जी 19 जनवरी 2019 को प्रातः बुन्देलखण्ड के प्राचीनतम प्रमुख तीर्थ नैनागिरि पहुँची। नैनागिरि में माता जी की आगवानी 500 से अधिक ग्रामीण महिलाओं ने अपने सिर पर मंगल कलश और दीपक रखकर, 700 से अधिक छात्रों ने माता जी के आगे–आगे पुष्प वृष्टि करते हुए और नये पुराने वाद्य यंत्र बजाते और नृत्य करते ग्वालाओं ने की। माता जी का स्वागत सागर संभाग के संभागीय आयुक्त श्री मनोहर दुबे, आई.ए.एस., न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जैन, डॉ. भागचन्द्र जी 'भास्कर', नागपुर, नैनागिरि तीर्थ के अध्यक्ष श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस.), सागर के सुप्रसिद्ध अधिवक्ता श्री अरविन्द रवि एवं श्री विजय कुमार मल्थू बाबा जैन, सागर, महाप्रबंधक श्री मनोज कुमार जैन, डॉ. संगीता जैन, भोपाल, इंजीनियर सुरेन्द्र सिंघई, श्रीमती वर्षा सिंघई, एडवोकेट, नई दिल्ली और प्राचार्य श्री सुमति प्रकाश जैन, नैनागिरि तथा तीर्थ के सभी पदाधिकारियों ने किया।

3. सर्वप्रथम सिंघई सतीशचन्द्र केशरदेवी जैन विद्यालय के सुविकसित परिसर में माता जी सहित सप्तार्यिकाओं का चरण वंदन किया गया। नैनागिरि के छात्रों ने चलती–फिरती सरस्वती देवी का स्वागत किया। नारी शक्ति की जीवंत प्रतिमा को

शत–शत वंदन और अभिनंदन किया। अपनी शैक्षणिक सफलताओं के लिए आशीर्वाद प्राप्त किया। माता जी की यौवन सुलभ क्षिप्र गति, सतत जागरूकता और सर्वव्यापी संतुलित चिंतन ने छात्रों को अत्यधिक प्रभावित किया। माता जी की शौर्य और पराक्रम की कहानियों ने उन्हें प्रेरित किया। माता जी विद्या और बुद्धि की अधिष्ठात्री देवी है। विद्यालय परिवार ने उनसे नैनागिरि विद्यालय में सरस्वती जी की सुन्दर और आकर्षक प्रतिमा का निर्माण कराने में सहयोग देने के लिए प्रार्थना की है। जैन सांस्कृतिक जगत के उभरते सितारे डॉ. जीवन प्रकाश जैन एवं प्रतिष्ठाचार्य विजय कुमार जैन ने छात्रों को अपना मार्गदर्शन दिया।

4. माता जी ने नैनागिरि तीर्थ पर पूर्वी प्रवेश द्वार (बक्स्वाहा) की ओर से 19 जनवरी, 2019 को प्रवेश किया। उन्होंने सिद्धक्षेत्र परिसर में भी पूर्वी द्वार से 19 जनवरी, 2019 को प्रवेश किया और पश्चिमी द्वार से 21 जनवरी, 2019 को दलपतपुर की ओर प्रस्थान किया। इस प्रकार उन्होंने नैनागिरि में सूर्य की किरणों की भॉति आध्यात्मिक प्रकाश विकीर्ण करने का अनोखा ऐतिहासिक उदाहरण प्रस्तुत किया। नैनागिरि स्थित संत भवन में जैन संस्कृति के शाश्वत मूल्यों की सर्वोच्च संरक्षिका पूज्य माता जी के समीप बैठकर जन–जन को उनकी शक्तिशाली आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव हुआ है। माता ज्ञानमती जी ने जैन संस्कृति के सर्वतोमुखी विकास में आदर्श भूमिका

का निर्वाह किया। सम्यक्दर्शन, ज्ञान और चारित्र की त्रिवेणी माता जी ने अपने प्रवचन में घोषणा की कि देव भक्ति से सम्यक्दर्शन, शास्त्रभक्ति से सम्यक्ज्ञान और गुरूभक्ति से सम्यक्चारित्र की प्राप्ति होती है।

5. भगवान पार्श्वनाथ के मंदिर में बैठकर बाबा दौलतराम जी वर्णी ने वर्ष 1902 में गोम्मटसार (प्राकृत) का हिन्दी पद्य में छंदोदय के नाम से अनुवाद किया। भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा यह ग्रन्थ गत वर्ष ही प्रकाशित हुआ है। श्री सुरेश जैन द्वारा यह छंदोदय पूज्य माता जी एवं श्री मनोहर दुबे, आयुक्त, सागर संभाग को भेंट किया गया। श्री दुबे ने आश्वस्त किया कि वे जैन तीर्थ नैनागिरि के चतुर्मुखी विकास के लिए अपनी ओर से ठोस प्रयास करेंगे।

6. नैनागिरि जैन तीर्थ के अध्यक्ष श्री सुरेश जैन ने पूज्य ज्ञानमती माता जी और चन्दनामती माता जी को शिलाखण्ड में उत्कीर्ण डॉ. पन्नालाल जी साहियाचार्य, सागर द्वारा लिखित नैनागिरि वंदना और पण्डित शिवचरणलाल जैन, मैनपुरी द्वारा विरचित नैनागिरि स्तुति का अवलोकन कराया और उनसे निवेदन किया कि वे भी हमें नैनागिरि में विराजे भगवान पार्श्वनाथ और जैन तीर्थ पर अपनी छोटी सी रचना दें। ज्ञानमती जी और चन्दनामती जी ने रात्रि में ही संस्कृत, हिन्दी और अॅग्रेजी में रचनाऐं तैयार कर प्रातःकाल ही पारस चैनल पर प्रसारित की ओर अपनी हस्तलिखित प्रतियॉ सुरेश जी को प्रदान की।

7. यह सराहनीय और प्रत्येक संत के लिए अनुकरणीय है कि 20 जनवरी 2019 को प्रातः नैनागिरि में भगवान पार्श्वनाथ की शांतिधारा करते समय माता जी ने आचार्य विद्यासागर जी के स्वास्थ्य लाभ की कामना की। यह उल्लेखनीय है कि आचार्य विद्यासागर जी 40 वर्ष पूर्व वर्ष 1978 के चातुर्मास में नैनागिरि में विराजे इन्हीं तदाकार भगवान पार्श्वनाथ की कृपा से स्वस्थ हुए थे।

8. नैनागिरि के पार्श्वनाथ मंदिर में उनके बैठने के लिए भव्य मंच बनाया गया था किन्तु उन्होंने बताया कि यह मंच भगवान पार्श्वनाथ के चरणों से दो इंच ऊॅचा है। अतः वे मंच पर नहीं बैठी और पाटे पर ही नीचे बैठ गई। उन्होंने प्रत्येक आगंतुक को भव्यात्मा जैसे सम्माननीय शब्द से संबोधित किया। निश्चित ही उनकी यह विनम्रता जिनेन्द्र भगवान, जिनशासन एवं जिनवाणी के प्रति उनकी अटूट भक्ति एवं सम्पूर्ण समर्पण का ही प्रतीक है। अभिषेक के उपरांत 20 जनवरी, 2019 को भगवान ऋषभदेव की विश्व प्रसिद्ध सर्वोच्च प्रतिमा STATUE OF AHINSA की जननी दिव्यशक्ति, भारतगौरव, गणिनी ज्ञानमती माता जी के पावन सानिध्य, प्रज्ञाश्रमणी आर्यिकारत्न चन्दनामती माता जी के मार्गदर्शन और न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जैन

की अध्यक्षता में स्वस्ति श्री पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति जी स्वामी द्वारा विश्व शांति अहिंसा वर्ष में नैनागिरि पर्वत पर **''माता ज्ञानमती ध्यान केन्द्र''** का लोकार्पण किया गया।

9. दोपहर में श्री गणेश प्रसाद वर्णी सभागार में बुन्देलखण्ड के प्रत्येक नगर और ग्राम से पधारे जैन समाज के 2500 से अधिक प्रतिनिधियों ने माता जी की वंदना की। श्रद्धेय स्वस्ति श्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी ने अयोध्या में आयोजित महामस्तकाभिषेक में कलश लेने के लिए सबको आमंत्रित किया। उन्होंने आग्रह किया कि 21 मार्च 2019 को पूरा बुन्देलखण्ड अयोध्या पहुँचकर भगवान ऋषभदेव की विशाल मूर्ति का अभिषेक करें। ज्ञानमती माता जी की नैनागिरि वंदना की स्मृति को स्थाई स्वरूप देने के लिए आदि ब्रह्मा भगवान ऋषभदेव की एक हजार वर्ष प्राचीन मूर्ति शीघ्र ही वेदी पर विराजमान की जावेगी। इस वेदी पर भक्तामर स्तोत्र के आवश्यक उद्धरण अंकित किए जावेंगे।

10. द्रोणागिरि और नैनागिरि क्षेत्र के युवा नेता श्री पवन घुवारा, श्री अशोक क्रान्तिकारी, श्री आशीष जैन, (श्री पाईप), सागर और उनके साथियों ने नैनागिरि पर्वत पर अचानक ही माता जी से सिद्ध शिला चलने के लिए निवेदन किया। वे युवती की भॉति सिद्ध शिला दर्शन के लिए तुरंत तेज गति से चल दी। दुर्गम क्षेत्र में स्थित सिद्ध शिला पर बैठकर सिद्धों की आराधना की। सप्तार्यिकाओं ने अपनी योग साधना की। चालीस हजार वर्ष पुराने शैलचित्रों के समीप शिलाओं पर स्थित तीर्थंकरों के अकृत्रिम चरणों की वंदना की। सिद्ध शिला की यह अचानक यात्रा पूज्य माता जी के का अनुपम बल का असाधारण उदाहरण है। नैनागिरि के आचार्य वरदत्त और द्रोणागिरि के आचार्य की भूमिका को विश्वपटल पर प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। नैनागिरि की सिद्धशिला पर स्थित सिद्धों के चरण चिन्हों की प्राण प्रतिष्ठा की। उन्हें पूज्य घोषित किया। ऐसा प्रतीत होता है कि सभी तीर्थंकरों की देवियॉ उन्हें स्वस्थ रखती है। प्रसन्न रखती है। उन्हें सब कुछ सुलभ कराती है। अनेक अदृश्य आध्यात्मिक शक्तियॉ 86 वर्ष की आयु में भी नैनागिरि के गहन वन और पहुॅच विहीन क्षेत्र में स्थित सिद्धशिला जाने के लिए उन्हें प्रेरित करती है। उनका पथ प्रशस्त करती है। वे भीषणतम शीतलहर में जन–जन को कुन–कुनी और गुन–गुनी ऊष्मा प्रदान करते हुए बुन्देलखण्ड के तीर्थो की वंदना कर रहीं हैं। महिलाओं और बालिकाओं को अक्षय ऊर्जा प्रदान कर रही है।

11. आचार्य शांतिसागर जी वर्ष 1929 में बीस तीर्थंकरों की सिद्धभूमि शिखरजी की यात्रा पर जाते समय अपने सप्तर्षियों के साथ नैनागिरि पधारे थे। 90 वर्षो बाद उनकी जीवंत प्रतिनिधि बनकर पूज्य ज्ञानमती माता जी ने बुन्देलखण्ड के प्राचीनतम

सुप्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र नैनागिरि दिनॉक 19, 20 एवं 21 जनवरी, 2019 को अपने संघ के साथ पधारकर उनकी यात्रा को जीवंत किया। जन–जन को अपना मंगल और प्रभावी आशीर्वाद दिया। आकाश के झिलमिलाते सप्तर्षियों की भॉति हम इन सप्तार्यिकाओं का पूरी आत्मीयता और श्रद्धापूर्वक स्वागत करते हैं। अभिनन्दन करते हैं। माता जी बुन्देलखण्ड के तीर्थो की यात्रा करते हुए मार्च, 2019 में भगवान ऋषभदेव प्रभृति पॉच तीर्थंकरों (भगवान अजितनाथ, भगवान अभिनन्दननाथ, भगवान सुमतिनाथ तथा भगवान अनन्तनाथ) और भगवान राम की जन्मभूमि अयोध्या पहॅुच रही है। अयोध्या में वे भगवान ऋषभदेव के महामस्तकाभिषेक और आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव को अपना सानिध्य प्रदान करेंगी।

12. नैनागिरि यात्रा के कुछ दिन पूर्व खुरई में दिगंबर समाज की तेरह पंथी और बीस पंथी परंपराओं के शीर्षस्थ आध्यात्मिक संतो – पूज्य माता जी और आचार्य विद्यासागर जी – का मधुर मिलन हुआ। ज्ञानमती माता जी ने इस अवसर पर कहा कि भारत में जैन समाज अल्पतम अल्पसंख्यक है, इसलिए हमें संगठित होने की आवश्यकता है। भले ही मतभेद रहे लेकिन मनभेद नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि साधु समाज संगठित होकर धर्म की प्रभावना करें। सभी साधुओं के मूलगुण 28 ही हैं और उनका पालन सभी पिच्छीधारी संत करते हैं। हम सभी के मूल आराध्य भगवान महावीर ही हैं। आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज हम सबके आद्य आचार्य हैं। जैन शासन में कहीं कोई मतभेद नहीं है। अंतर है तो मात्र पूजा पद्धतियों में हैं और दोनो पूजा पद्धतियों को जैन आगम समान रूप से स्वीकार करता है। अतः अपनी विशेष पूजा पद्धति अपने और अपने परिवार तक ही सीमित रखें। हम सब मिल जुलकर रहें और सांप्रदायिक वैमनस्य की विदाई करें। वरिष्ठतम एवं शीर्षस्थ माता जी द्वारा प्रसारित आध्यात्मिक और सामाजिक समन्वय और एकता का जयघोष करें। Henry Ford says "Coming together is a beginning; keeping together is progress; working together is success." It is, indeed, this mantra of working together that has brought Poojya Mata Ji to Nainagiri and Bundelkhand.

13. माता जी ने बुन्देलखण्ड के तीर्थो की यात्रा के समय आध्यात्मिक एकता के सराहनीय उदाहरण प्रस्तुत किए है। वे राहतगढ़ से सागर का सीधा रास्ता छोड़कर केवल और केवल आचार्य श्री विद्यासागर जी के दर्शन करने के लिए खुरई गई। इसके पूर्व इन्दौर में आचार्य अनेकांतसागर जी और भोपाल में आचार्य निर्णयसागर जी के दर्शन किए। बॉसा तारखेड़ा में आचार्य श्री उदारसागर जी के दर्शन किए। दमोह में निर्यापक मुनि योगसागर जी की वंदना की। वेला में आचार्य सिद्धांतसागर के दर्शन किए। अहार जैन तीर्थ पर आचार्य विनिश्चयसागर जी को नमोस्तु किया। वयोवृद्ध

एवं वरिष्ठतम गणिनी आर्यिका होते हुए भी छह आचार्यो और उनके संघस्थ मुनिवरों को पूरी विनम्रता और आत्मीयता के साथ नमोस्तु किया। उन्हें अपने द्वारा विरचित षट्खण्डागम टीका की सभी प्रकाशित पुस्तकें भेंट की। उनकी सामाजिक सेवाओं की सराहना की। पूज्य चंदनामती माता जी ने बुन्देलखण्ड की पूजन रची। यह उल्लेखनीय है कि वर्ष 1987 में वरिष्ठतम माता ज्ञानमती जी से प्रेरणा लेकर नैनागिरि में बुन्देलखण्ड की 12 बहिनों ने आचार्य विद्यासागर जी से आर्यिका दीक्षा ली थी।

14. 200 से अधिक जैन पुस्तकों की लेखिका और पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माता जी उत्कृष्ट लेखन एवं मधुर गायन की विशिष्ट प्रतिभा से ओतप्रोत है और असाधारण कर्मठता एवं संकल्पशक्ति की धनी है।

15. चंदनामती जी के मिठास भरे शब्द हमारी आत्मा को झकझोरते हैं। चंदनामती जी की मधुर वाणी युवतियों को उमंग और आकांक्षा के रचनात्मक बिंब और प्रतिबिंब दे रही है। लंबे बोरिंग प्रवचन से दूर रहकर वे उन्हें आत्मीयता से ओतप्रोत संक्षिप्त और प्रभावी शब्दों में आधुनिक और वैज्ञानिक ढंग से आगे बढ़ने और ऊपर उठने का पाठ पढ़ा रही है। उन्हें पूरे प्यार के साथ खुश रहने, प्रसन्न रहने और सदैव मुस्कराते रहने की सीख देती है। नैनागिरि की यात्रा के अवसर पर चन्दनामती जी ने बम्हौरी, सुनवाहा और बक्स्वाहा में बालिका मण्डल का गठन किया। बम्हौरी बालिका मण्डल ने 20 जनवरी को नैनागिरि में अपनी प्रस्तुति दी। ये बालिकाऐं स्वयं अपने रचनात्मक कार्य करती हैं। ऐसे कार्यो को करने की विधि सीखती है। सर्जन बनती हैं। इन्नोवेटर बनती हैं। चंदनामती जी नैनागिरि एवं समीपस्थ ग्रामों में बच्चियों के भावनात्मक और रचनात्मक विकास के लिए ठोस प्रयास कर रही है। उनमें अच्छे पारिवारिक और सामाजिक रिश्ते निभाने की क्षमता बढ़ा रही है। उन्हें ऊँची उपलब्धियॉ प्राप्त करने के लिए प्रेरित कर रही है। उनमें सामाजिक और भावनात्मक अच्छी प्रवृत्तियॉ पैदा कर रही है। उनमें नेतृत्व और वक्तृत्व शक्ति विकसित कर रही है। उनकी प्रतिभा पारस टी.व्ही. चेनल के माध्यम से पूरे देश में उभर रही है। उन्हें प्रेरणा दे रही है। प्रोत्साहित कर रही है। उन्हें वे ऐसा सब कुछ सिखा रही है जो स्कूल की कक्षा में सिखाया या पढ़ाया नहीं जाता है। उनके अभिभावकों को प्रेरित कर रही है कि अपनी पुत्री के विवाह के समय उसे छोटी सी धार्मिक पुस्तिका भेंट में अवश्य दें।

16. दिव्य आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत भीषण शीत में नैनागिरि पधारीं। माता जी के दर्शन करते समय हमें विलक्षण अनुभव हुआ था। हमारे शब्द मौन हो गए थे। हमारी लेखनी थम गई थी और हमारी भावनाऐं नृत्य करने लगी थी। माता जी की संकल्प

शक्ति, विद्वत्ता, गुणवत्ता, मितव्ययिता, आत्मीयता और विनम्रता को शत्–शत् प्रणाम। ऋषभनाथ की सर्वोच्च प्रतिमा की जननी माता जी को हम आचार्य मानतुंग के निम्नांकित शब्दों में अपनी वंदामि समर्पित करते हैं :–

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्।
नान्यः सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।।
सर्वा दिशो दधति भानु सहस्त्ररश्मिं।
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम्।।

17. ऋषभादिक चौबीस तीर्थंकरों से प्रार्थना है कि पूज्य ज्ञानमती जी को सभी आवश्यक शक्तियॉ प्रदान करें जिससे कि वे हम सबको मातृत्व से ओतप्रोत अपना स्नेह और अपनी आध्यात्मिक शक्तियॉ प्रदान करते हुए सिद्ध पथ पर सदैव सफलतापूर्वक आगे बढ़ती रहें।

सुरेश जैन (I.A.S.)
30, निशात कॉलोनी,
भोपाल (म.प्र.)

माताजी के संघ सहित श्री सुरेश जैन एवं न्यायमूर्ति विमला जैन

(13) मांगी–तुंगी में निर्मित विश्व की सर्वोच्च जैन प्रतिमा के दर्शन करें

1. जीवंत तपोमूर्ति ज्ञानमती जी अहिंसा की जीवंत मूर्ति हैं। उनके विपुल साहित्यिक अवदान का भली भॉति मूल्यांकन कर दो विश्वविद्यालयों द्वारा उन्हें डी.लिट, की मानद उपाधि से विभूषित किया गया है। चार सौ से अधिक आगम ग्रन्थों की प्रणेता और सिद्धांत चक्रेश्वरी की उपाधि से विभूषित ज्ञानमती जी की हित–मित और प्रिय वाणी श्रोताओं को अकथनीय आनन्द प्रदान करती है। उनकी वीतरागता और हितोपदेशिता जैन धर्म को विश्वस्तरीय ख्याति प्रदान करती है। प्रत्येक श्रोता के मन में अहिंसा की भावना का प्रादुर्भाव कर उसे संपुष्ट करती है। उनकी हितोपदेशी वाणी की सरिता में स्नान कर श्रोता परिवार का प्रत्येक सदस्य शुद्ध होता है। आइए ! हम सब मिल–जुलकर अहिंसा और शांति के प्रभावी संदेश को सर्वत्र बिखेरती, प्रेम, वात्सल्य, सौहार्द्र तथा करूणा से ओतप्रोत माता जी के निर्मल और पवित्र हृदय से कल–कल बहती सरस्वती में सतत स्नान करें। ऐसी असाधारण मातृशक्ति से मांगीतुंगी में जन्मी विश्व के नवम आश्चर्य जैसी इस अद्वितीय प्रतिमा के दर्शन करें।
2. महाराष्ट्र राज्य में 1200 से अधिक जैन गुफाऐं है। इसी राज्य में स्थित नासिक जिले का क्षेत्रफल 15 हजार वर्ग किलोमीटर है। वर्ष 2011 में हुई जनगणना के अनुसार इस जिले की जनसंख्या 55 लाख से अधिक है। इस जिले की भाषा मराठी है। प्रशासकीय दृष्टि से इस जिले को 15 तालुका और 4 अनुभागों में बॉटा गया है। कलवान अनुभाग (सब डिवीजन) की बागलान (सटाना) तालुका उत्तर में अक्षांश 20 डिग्री 58 मिनिट्स और पूर्व में देशांश 74 डिग्री 22 मिनिट्स में स्थित है। सहयाद्रि पर्वत की उत्तरी दक्षिण पर्वत मालाओं और पश्चिमी घाट की पहाड़ियों में स्थित इस तालुका का क्षेत्रफल 15 सौ वर्ग किलोमीटर और जनगणना साढ़े तीन लाख है। बागलान क्षेत्र में भील और कोकिन जनजातियॉ निवास करती है। इस तालुका की औसत वर्षा 17 इंच है। इस पर्वतीय क्षेत्र की प्रमुख कृषि उपज बाजरा है। इस तालुका में सन् 1308 से 1619 तक बागलान शासकों का राज्य रहा। छत्रपति शिवाजी भोसले के राज्य में सूरत नगर के सामीप्य के कारण बागलान का अत्यधिक महत्व रहा। इस क्षेत्र में सालहेर, गुलहेर और पिसोलघाट ऐतिहासिक महत्व के किले है। इस तालुका में अनेक प्राकृतिक स्थल एवं मंदिर है। यशवंतरात महाराज (देव मामलेदार) एवं बॉयागॉव के सुप्रसिद्ध मंदिर है। सटाना से 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित ग्राम भिलवाड़ी की उत्तर दिशा में स्थित पर्वत की मांगी और तुंगी दो चूलिकाऐं हैं।

3. प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर मांगी तुंगी एक ऐसा सिद्ध तीर्थ है जहॉ आत्मा पवित्रतम स्थिति में पहुॅचकर पूरी तरह से प्रकाशित हो जाती है परिणामतः भगवान राम और भगवान कृष्ण की आत्माओं जैसी अनेकों आत्माऐं इस तीर्थ से मोक्ष पहुॅचने में सफल हो सकी हैं। एक बहुत ऊॅचे पर्वत की दो बहुत ऊॅची और खड़ी चट्टाने – पश्चिम की ओर मांगी और पूर्व की ओर तुंगी – स्थित है। मांगी से तुंगी शिखर अधिक ऊॅची है। समुद्र तल से मांगी की ऊॅचाई 4343 फीट और तुंगी की ऊॅचाई 4366 फीट है। भूतल से ही ऊॅची–नीची और टेढ़ी–मेढ़ी 2000 सीढ़ियॉ चढ़कर सहस्त्रों वर्ष पूर्व प्रकृति द्वारा निर्मित विशाल तोरणद्वार पर पहुॅचते है। इस तोरणद्वार से बाई ओर से मांगी और दाहिनी ओर से तुंगी शिखर को रास्ता जाता है। प्राकृतिक सुषमा से ओतप्रोत इन दोनों शिखरों पर ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व की महत्वपूर्ण प्रतिमाऐं यात्रियों, दर्शको और पर्यटको को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करती है। पहाड़ की चट्टानों में तराशी गई शताधिक गुफाऐं हमें आमंत्रित करती है।

4. दसवीं शताब्दि (सन् 981) में गंग साम्राज्य के मंत्री एवं सेनापति चामुण्डराय ने कर्नाटक राज्य के श्रवणबेलगोला नगर में 57 फीट ऊॅची भगवान बाहुबली की खड़गासन प्रतिमा का निर्माण कराया था। इसके बाद 12 वीं शताब्दि में मध्यप्रदेश की सतपुड़ा पर्वतमाता में स्थित बड़वानी के समीप बाबनगजा में 84 फीट ऊॅची भगवान आदिनाथ की प्रतिमा उकेरी गई। नौ शताब्दियॉ व्यतीत होने पर मांगी शिखर के नीचे 500 फुट की अखण्ड चट्टान प्राप्त हो गई और अपने जन्म दिन शरद पूर्णिमा 27 अक्टूबर, 1996 को माता जी ने इस विशाल मूर्ति के निर्माण की घोषणा कर दी। इस योजना से जुड़ने के लिए जैन समाज के प्रत्येक व्यक्ति को संबद्ध और संकल्पित कर

दिया। इसी बीच माता जी के संकेत से हमारे अभिन्न साथी और वन विभाग के वरिष्ठतम अधिकारी श्री सुरेश चन्द्र जैन (आई.एफ.एस.) और मुझे (सुरेश जैन, आई.ए.एस.) भारत सरकार के माध्यम से मूर्ति के अधीन स्थित शासकीय भूमि प्राप्त करने की प्रक्रिया में सफल सहयोग देने का असाधारण सौभाग्य प्राप्त हुआ। ज्ञानमती जी द्वारा प्रदत्त इस सौभाग्य से हमें और हमारे परिवार को अनेक अप्रत्याशित सफलताऐं प्राप्त हुई है। भूमि प्राप्त होते ही 3 मार्च, 2002 को शिला पूजन की गई।

5. आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माता जी की प्रेरणा से प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माता जी के मार्गदर्शन में एवं स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के कर्मठ, कुशल एवं सक्षम नेतृत्व में मांगी चोटी से सटे हुए पर्वत को काटकर अखण्ड पाषाण में विश्व की प्रथम भगवान आदिनाथ की 108 फीट ऊँची खड़्गासन प्रतिमा का मेसर्स मूलचन्द्र रामचन्द्र नाठा, जयपुर के सौभाग्यशाली कलाकारों के द्वारा निर्माण किया गया है। मूल प्रतिमा की ऊँचाई 108 फीट, मस्तक के ऊपर बालों की ऊँचाई 5 फीट, प्रशस्ति शिला 3 फीट एवं कमल (जिस पर प्रतिमा स्थापित कर प्रशस्ति अंकित की गई है) की ऊँचाई 5 फीट इस प्रकार कुल ऊँचाई 121 फीट हो जाती है। प्रतिमा के कंधों की चौड़ाई 30 फीट है। प्रतिमा के आगे 125 फीट ऊँची चट्टानों को काट कर 14 हजार वर्ग फीट का प्लेट फार्म बनाया गया है। प्रतिमा के पीछे करीब 60 प्रतिशत ऊँचाई तक पाषाण खण्ड जुड़ा है। प्रतिमा के चारों ओर परिक्रमा पथ है। यह प्रतिमा पूर्वमुखी है और इसकी दृष्टि मांगी एवं तुंगी पर्वत के बीच में पड़ती है। सूर्य जब दक्षिणायण होता है तब प्रतिमा पर सूर्य का पूरा प्रकाश पड़ता है। सूर्य के उत्तरायण होने पर सूर्य का प्रकाश प्रतिमा पर नहीं आता है एवं पर्वत की परछाई पड़ती है। किसी भी ऋतु में प्रतिमा के समक्ष बैठकर दर्शक अनंत आनन्द और प्रसन्नता प्राप्त करते हैं।

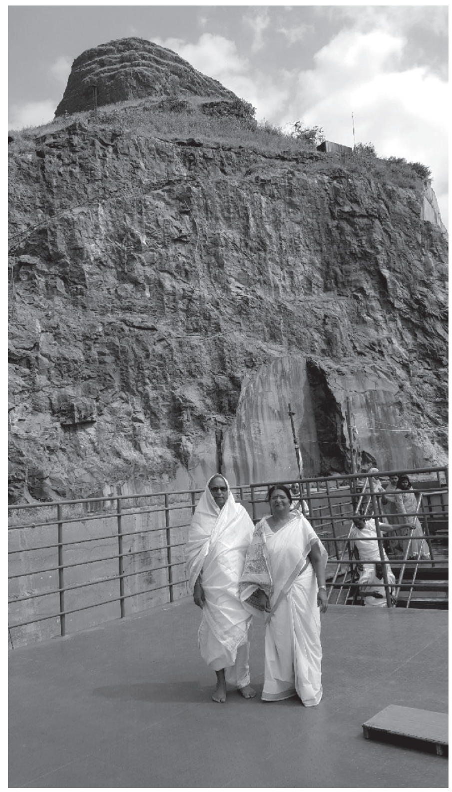

6. मांगी पहाड़ी पर सात प्राचीन मंदिर बने हुए है। यह सीता जी की तपोभूमि है। इस पहाड़ी पर स्थित कृष्ण कुण्ड के स्थल पर ही भगवान कृष्ण का महाप्रयाण हुआ था। समीप ही बलभद्र गुफा है जिसमें अनेक मूर्तियॉ विद्यमान है। तुंगी पहाड़ी पर पॉच मंदिर, भगवान चन्द्रप्रभु और भगवान रामचन्द्र की गुफा है। मांगी और तुंगी के बीच के पथ पर शुद्ध और बुद्ध मुनि की दो गुफाऐं है। पदमासन मुद्रा में विराजमान 21 फीट ऊॅची भगवान मुनिसुव्रतनाथ की विशाल मूर्ति है। सभी मूर्तियॉ भारतीय जैन संस्कृति की ऐतिहासिक एवं महत्वपूर्ण धरोहर है। अधिकांश मूर्तियॉ ईसा की छटवी सदी (सन् 594) में स्थापित की गई है। प्रायः सभी मूर्तियों के पथरीले चेहरे पर खिली हुई सौम्यता और शांति हमें आकर्षित करती है। निष्प्राण पत्थर से बनी हुई ये मूर्तियॉ तीर्थंकर बनने की पवित्र भावनाओं को भाने के लिए हमें प्रेरित करती है। सजीव और जीवंत है। मूर्तिकारों की पत्थरों में प्राण फूॅकने की असाधारण क्षमता को प्रदर्शित करती है। युगों–युगों के सांस्कृतिक इतिहास के विविध पक्षों को हमारे समक्ष उद्घाटित करती है। छोटी से छोटी मूर्ति का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व है। यह उल्लेखनीय है कि इस क्षेत्र के महाराजा वीरमसेन युद्धभूमि में जाते समय भगवान आदिनाथ की यक्षिणी चक्रेश्वरी देवी को नियमित रूप से प्रणाम करते थे। पवित्र भावनाओं से ओतप्रोत यात्री ही मांगी और तुंगी के मंदिरों के दर्शन करने और अर्द्ध रात्रि में विभिन्न वाद्य यंत्रों की मंगल ध्वनियॉ सुनने में सफल हो पाते है।

7. पुराकाल में माता मरुदेवी ने भगवान ऋषभदेव को जन्म दिया था। वर्तमान काल में माता ज्ञानमती और माता चन्दनामती ने ऋषभदेव की 108 फीट ऊॅची इस विशालतम प्रतिमा को जन्म दिया। निश्चित ही अद्वितीय एवं असाधारण मातृ शक्ति से उद्भूत यह प्रतिमा अहिंसा के संदेश को युगों–युगों तक पूरे विश्व में फैलाती रहेगी। यहॉ यह उल्लेख करना उपयुक्त प्रतीत होता है कि अपनी अग्नि परीक्षा के बाद महासती सीता जी ने अयोध्या में दीक्षा लेकर आर्यिका व्रत गृहण किए। वे माता पृथ्वीमति बनी। अपने संघ के साथ मांगी–तुंगी पधारी और 62 वर्षो तक इस पर्वत पर तपश्चर्या कर सोलहवें अच्युत स्वर्ग में प्रतीन्द्र बनी। ऐसा प्रतीत होता है कि ज्ञानमती माता जी भी पृथ्वीमति माता जी के मंगलपथ पर आगे बढ़ रही है।

8. प्रतिमा निर्माण कमेटी के महामंत्री डॉ. पन्नालाल जी पापड़ीवाल और इंजीनियर श्री चन्द्रकांत जी पाटिल के सतत समर्पण के लिए हम सभी उनके प्रति हार्दिक साधुवाद ज्ञापित करते है। श्री पापड़ीवाल अपना पारिवारिक कार्य छोड़कर स्थाई रूप से इस तीर्थ पर निवास कर रहे है। इंजीनियर श्री पाटिल ने तीन बार कैलाश मानसरोवर की पैदल यात्रा एवं 1008 बार शिखर जी की वंदना कर अपना शेष जीवन इसी प्रोजेक्ट के लिए न्यौछावर कर दिया है।

9. इस अद्वितीय मूर्ति का पंचकल्याणक 11 से 17 फरवरी, 2016 के बीच और महामस्तकाभिषेक 18 फरवरी, 2016 से एक वर्ष की लंबी अवधि तक संपन्न हुआ।

10. कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी, जैन संस्कृति का ही नहीं अपितु प्रकृति और पर्यावरण का संरक्षण कर रहें है। सम्पूर्ण समर्पण और निष्ठा से ओतप्रोत उनके नेतृत्व में माता जी के आशीर्वाद से प्रायोजित सभी योजनाऐं निर्धारित समय पर पूर्ण हुई हैं। देश के सुप्रसिद्ध आर्कीटेक्ट्स और इंजीनियर्स की तकनीकी सलाह से प्रत्येक योजना का निर्माण, प्रबंधन एवं कार्यान्वयन उच्च स्तरीय गुणवत्ता के साथ किया गया हैं। स्वामी जी के असाधारण प्रबंधन कौशल से पूर्व निर्धारित न्यूनतम अवधि में पूर्णतः निर्मित पॉच तीर्थ देश के सामाजिक नेताओं और संतों के लिए दर्शनीय और अनुकरणीय है।

11. अहिंसा और योग प्राचीनतम जैनदर्शन और भारतीय संस्कृति के आधारभूत जीवन मूल्य है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा इन दोनों शाश्वत जीवन मूल्यों को विश्वव्यापी प्रतिष्ठा प्रदान की गई है। संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्णय के अनुसार 2 अक्टूबर को विश्व अहिंसा दिवस और 21 जून को विश्व योग दिवस की घोषणा की गई है। मोहन जोदड़ो और हड़प्पा में भगवान ऋषभदेव की कायोत्सर्ग की योग मुद्रा में योगी–स्वरूप की प्रतिमा प्राप्त हुई है। सर्वप्रथम भगवान ऋषभदेव ने ही जन–जन को योग और ध्यान की शिक्षा प्रदान की। विभिन्न योग–मुद्राओं में धर्म–ध्यान और शुक्ल ध्यान जैसे पवित्र और सकरात्मक ध्यान की प्रक्रियाऐं अपनाते हुए हमारे अनेक योगी तीर्थंकर बने है। परिणामतः खड़गासन या पदमासन योग मुद्राओं में ही सभी जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाऐं प्राप्त होती है। संभवतः इन्हीं तथ्यों पर विचार करते हुए माता जी ने खड्गासन योगमुद्रा में ही भगवान ऋषभनाथ की इस सर्वोच्च प्रतिमा का निर्माण कराया है।

12. ज्ञानमती माता जी अपने वार्धक्य से नहीं अपितु अपने असाधारण आध्यात्मिक अवदान, मधुर व्यवहार, प्रभावी वाणी और आचरण से गणिनी बनी है। उनके समीप कुछ क्षण बैठकर ही पूर्णिमा के चन्द्रमा की भॉति उनके धवल व्यक्तित्व की रश्मियॉ हमारे जीवन पथ को अनुपम ढंग से प्रकाशित करने लगती है। हमारा शरीर स्वस्थ हो जाता है। हमारी श्वास संतुलित और लयबद्ध हो जाती है। हमारी इन्द्रियॉ क्रियाशील और गतिशील हो जाती है। हमारा मन एकाग्र हो जाता है। हमारे भाव विशुद्ध हो जाते है। हमारी चेतना जागृत हो जाती है। माताजी हमारी त्याग की भावना में वृद्धि कर हमारे मन और संकल्प की शक्तियों में कई गुना वृद्धि कर देती है। हमें आधि, व्याधि और उपाधि से मुक्त कर समाधि के पवित्रतम पथ पर आगे

बढ़ाती है। हमें मानसिक व्यथाओं और चिंताओं से मुक्त करती है। हमारी संकल्प शक्ति को दृढ़ता प्रदान करती है। उनके सानिध्य में रहकर हमारी अंतर्मूर्छा टूटने लगती है। हमारी शुद्ध चेतना विकसित होने लगती है। अग्नि शिखा की भॉति उनके विचार सदैव श्रेष्ठतम और उर्ध्वमुख होते है। वे अपने विचारों, भावनाओं और क्रियाओं के प्रति निरंतर जागरूक रहती है। वे इनमें सतत रूप से आवश्यक संशोधन, संबर्द्धन और परिवर्तन कर उन्हें रचनात्मक स्वरूपों में रूपांतरित करती रहती है। माता जी प्रत्येक क्षण जागरूक और सावधान रहती है। अपने और अपने शिष्यों का भाग्योदय कर सबके जीवन निर्माण के लिए सदैव प्रयत्नशील रहती है। अपनी आंतरिक चेतना का जागरण कर अपने अखण्ड व्यक्तित्व से सभी को प्रभावित करती है। पूर्ण चन्द्र की शीतलता की किरणों की भॉति हमें आनंदित और आत्मविभोर करती है।

13. ज्ञानमती जी सदैव विषय के विशेषज्ञों से सलाह लेकर अपने सिद्धांतों और मूल्यों के अनुरूप त्वरित निर्णय लेती है और ऐसे निर्णय को सफलता पूर्वक कार्यान्वित कराने में अपना प्रभावी आशीर्वाद प्रदान करती है। निर्माण कार्यो के लिए एकत्रित कोष का योजनाबद्ध ढंग से निश्चित समयावधि में विनियोग सुनिश्चित कराती है।

14. जैन संस्कृति विविधताओं से भरी हुई है। ज्ञानमती माता जी ने सांप्रदायिक संकीर्णताओं से ऊपर उठकर देश की पूरी जैन समाज को एक जुट किया है। पूरे राष्ट्र में जैन संस्कृति के प्रचार–प्रसार के क्षेत्र में वरिष्ठतम आर्यिका के रूप में अनुपम योगदान देकर नारी का गौरव बढ़ाया है। वे अपने प्रवचनों में देश की पूरी जैन समाज को एकजुट करने के प्रभावी सूत्र प्रदान करती है। उन पर अमल करती है। संयम और करूणा की अनेकों मिसाल कायम करती है। अपने श्रोताओं में सदैव आत्म विश्वास की भावना भरती है। वे बड़ी भली आत्मा है। दूसरों के दुःख का अहसास करती है। सभी को अच्छा जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है। अतः हमें माता जी के सपनों को पूरा करने के लिए उनके नेतृत्व में एक जुट हो।

15. यह आवश्यक है कि विश्व के नवम आश्चर्य जैसी इस प्रतिमा को मौसम, धूप और वर्षा से बचाने के लिए और सुरक्षित रखने के लिए विश्व में उपलब्ध सभी आधुनिकतम उपाय किए जावें। भारत सरकार और राज्य सरकार के माध्यम से मांगीतुंगी को विश्व के पर्यटन नक्शे में सम्मिलित किया जाय। समीपस्थ सभी पर्यटन केन्द्रों, रेलवे स्टेशनों और हवाई अड्ड़ों पर प्रतिमा की स्थायी प्रतिकृतियॉ स्थापित कराई जावे।

16. हम स्थानीय जनजातियों के किसानों को अपनी परंपरागत फसलों को बढ़ावा देने और उसे बाजार उपलब्ध कराने में मदद करें ताकि यहॉ के किसानों का मुनाफा बढ़

सके। किसानों के व्यापक कल्याण के लिए काम करें। उन्हें नए कैरियर के पथ पर आगे बढ़ाऐं और उनके बीच अपनी जगह बनाऐं।

17. भारत सरकार और राज्य सरकार से संपर्क कर हम ग्राम भिलवाड़ी में पर्वतारोहण प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित कराए। स्थानीय जनजातियों के युवक–युवतियों को पर्वत पर चढ़ने/उतरने का प्रशिक्षण की सुविधाऐं दिलाऐं और पर्वत पर चढ़ने में सहयोगी औजार/ऑक्सीजन सिलेण्डर क्षेत्र के भण्डार में रखने की व्यवस्था करें।

17. इस लेख के पाठकों से मेरा विनम्र अनुरोध है कि मांगी–तुंगी पर्वत पर निर्मित 108 नहीं अपितु 121 फीट ऊँची इस आश्चर्यजनक प्रतिमा के यथाशीघ्र सपरिवार दर्शन करें। मंगल कलश से प्रतिमा का सपरिवार अभिषेक करें और इस प्रतिमा की मातेश्वरी ज्ञानमती जी को वंदामि निवेदित करें। प्रभु से यह प्रार्थना है कि ज्ञानमती जी सदैव स्वस्थ और प्रसन्न रहते हुए अपना मंगल आशीर्वाद हम सबको प्रदान करती रहें।

श्री सुरेश जैन, महोत्सव समिति के संरक्षक प्रशासनिक रहे है। उन्होंने ऋषभगिरि की शासकीय भूमि प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। उन्होंने भोपाल दूरदर्शन तथा आकाशवाणी के माध्यम से महोत्सव की जानकारी का प्रचार–प्रसार किया है।

(14) वाग्देवीं ज्ञानमतीं समुपासमहे

– न्यायमूर्ति विमला जैन

या देवी सर्व भूतेषु मातृ रूपेण सुस्थिता।
नमस्तस्ये, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः।।

1. सर्वप्रथम इस श्लोक के भाव को हम अपने हृदय की समस्त भावनाओं से आपूरित करते हुए प्रातः स्मरणीय तपोमूर्ति, सजग, क्रियाशील, ममतामयी ज्ञान की मूर्ति गणिनी प्रमुख ज्ञानमती माता जी को शत शत वंदन करते हैं। सन् 1934 अक्टूबर शरद पूर्णिमा के दिन ग्राम टिकैत नगर जिला बाराबंकी उत्तरप्रदेश में जैनत्व के गुणों से ओतप्रोत श्री छोटेलाल एवं सुश्राविका मोहनी देवी के घर में सबसे बड़ी बेटी के रूप में जन्म लिया। जिसे ''मैना'' नाम दिया गया। आप जैसी नारी के जन्म लेने से पृथ्वी पुण्यवान हुई। कुल पवित्र हुआ और जननी कृतकृत्य हुई है। आपने अपने जन्म से संस्कृत की निम्नांकित सूक्ति को चरितार्थ कर दिया है :–

कुल पवित्रं, जननी कृतार्था, वसुन्धरा पुण्यवती बभूव।

2. आपने 18 वर्ष की आयु में ही आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से सन् 1952 में आजन्म ब्रम्हचर्यव्रत, सप्तम प्रतिमा एवं गृह त्याग व्रतों को अंगीकार किया। जितनी मेरी आयु है उतने सालों का आपका तप है। यह लिखते हुए मुझे बहुत प्रसन्न्ता हो रही है कि सन् 1952 में ही जन्माष्टमी के दिन मेरा जन्म हुआ। इस तरह आपका आध्यात्मिक जन्म और मेरा सांसारिक जन्म सात दशक पूर्व एक ही वर्ष में हुआ। पूज्य माता जी (मैना) ने 1953 में आचार्य देशभूषण महाराज से क्षुल्लिका दीक्षा और परम पूज्य वीरसागर महाराज से सन् 1956 में वैशाख कृष्ण दूज को आर्यिका दीक्षा प्राप्त कर ''आर्यिका ज्ञानमती जी'' का पदनाम प्राप्त किया। निरन्तर अध्ययन अध्यापन के माध्यम से विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर 'यथा नाम तथा गुण' की युक्ति को चरितार्थ किया।

3. आप किशोरावस्था से ही आत्मसाधना के लिए जप, तप, ध्यान करते हुए आध्यात्मिक पथ पर निरंतर अग्रसर होती रही हैं। इसी मार्ग पर चलने और बढ़ने के लिए सभी का मार्ग प्रशस्त कर अपने आशीर्वादों से सभी की झोली भरती रही हैं। आप भारतीय संस्कृति की अंतरात्मा है। आपने जैन संस्कृति की व्यापक आध्यात्मिक व्यवस्था को गहरी निष्ठा और गंभीरता में अंगीकार किया है। आपके व्यक्तित्व में बुद्धि, ज्ञान और विवेक का मणिकांचन समन्वय है। आपने अपनी पूरी सामर्थ्य से उसे युगानुकूल

परिवेश में ढाल दिया है। आपने अपने जीवन को मंदिर की तरह पावन, पोथी की तरह ज्ञान से परिपूर्ण और शास्त्रों की भॉति अनुभव से संपूर्ण बना लिया है। आपका जहॉ जहॉ पदार्पण होता है वहॉ अंधकार नष्ट हो जाता है और प्रकाश फैल जाता है। आप सतत बहती सरिता एवं पूरे वातावरण में फैलती सुगंधित वायु है। आप नई सुबह की आगाज है। आपके चरित्र, चिंतन एवं व्यवहार से प्रत्येक व्यक्ति को सुसंस्कृत जीवन का शिक्षण–प्रशिक्षण मिलता है। आपके संदेशो में एकता, ममता, विनम्रता, शुचिता और मानव प्रेम की प्रधानता होती है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, हिंसा जैसे विकारों को समूल नष्ट करने की राह होती है। आपकी वाणी से हमें वैचारिक शक्ति के साथ–साथ आत्मिक और आध्यात्मिक पोषण प्राप्त होता है।

4. आपने अनेकों प्राचीन ग्रन्थों की संस्कृत टीका और उनका हिन्दी अनुवाद किया। अनेक मौलिक ग्रन्थों की रचना की, व्याकरण, न्याय जैसे दुरूह विषयों पर आपकी लेखनी सतत रूप से चलती रही। अनेको विधानों और पूजाओं की रचना की। साथ ही आपने नारी जगत, बाल जगत की ज्ञानवृद्धि के लिए भी साहित्य रचना की। शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर, राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों का आयोजन करवाकर समाज के विद्वानों को जैन सिद्धांतों का सार्थक एवं व्यावहारिक स्वरूप पहचानने का अवसर दिया। आपका साहित्य सरल, सुबोध और बोधगम्य भाषा में विभिन्न उदाहरणों के साथ विस्तार पूर्वक लिखा गया है। जो जैन आचार, विचार एवं व्यवहार का पाठ पढ़ाता है। जैन धर्म के तीन रत्न सम्यकदर्शन, सम्यकज्ञान और सम्यकचारित्र की महती आवश्यकता बताते हुए आपने सर्वत्र स्पष्ट किया है कि देव शास्त्र गुरू पर सम्यक श्रद्धान किए बिना कोई भी धार्मिक कार्य सफल नहीं हो सकता। आपके द्वारा रचित साहित्य के आधार पर फरवरी, 1995 को डी.लिट. की मानद उपाधि से आप को सम्मानित कर अवध विश्वविद्यालय गौरवान्वित हुआ। विभिन्न सामाजिक संस्थाओं ने भी पूज्य माता जी को अनेक उपाधियों से अलंकृत कर स्वयं को आनंदित किया। आपके प्रयासों से शिक्षा जगत की पाठ्य पुस्तकों में संशोधन हुआ। जिससे जैनधर्म संबंधी भ्रान्तियों में सुधार हुआ। आपकी जिव्हा और लेखनी पर देवी सरस्वती विराजित रहती है। आपने आदि शक्ति महासरस्वती की प्रबल धारा में अपने व्यक्तित्व को सफलतापूर्ण और प्रभावी ढंग से एकाकार किया है। ऐसा लगता है कि जिनवाणी की सेवा ही माता जी का जीवनवृत्त है।

आचार्य विशुद्धसागर जी की सद्देशना भाग–1 पृष्ठ 112 में उल्लेख है कि :–

''इस युग में आर्यिका माताओं की बहुत देन है। ज्ञानमति माता जी ने जो ज्ञान के क्षेत्र में कार्य किया है वह बड़े–बड़े आचार्य भी नहीं कर पाये।''

5. तीर्थंकरों के जन्म एवं कल्याणक भूमियों के संरक्षण संवर्द्धन एवं विकास में आपकी अतुलनीय भूमिका रही जिससे उन्हें नया स्वरूप प्राप्त हुआ और ऐसी भूमियॉ जागृत तीर्थस्थल बनकर पूज्यता को प्राप्त हुई। आपकी प्रेरणा और मार्गदर्शन से हस्तिनापुर, जम्बूद्वीप, अयोध्या, अकलूज (महाराष्ट्र) सनावद, (म.प्र.) प्रीति विहार (दिल्ली), अहिच्छत्र, प्रयाग कुण्डलपुर (नालंदा विहार) राजगृही, पावापुरी, गुणावा जी, सम्मेद शिखर जी, काकंदी जी में मंदिरों का निर्माण, जीर्णोद्धार आदि कार्य निर्धारित समय पर संपन्न हुए। आपकी प्रेरणा से ही मांगीतुंगी (महाराष्ट्र) के पर्वत पर विश्व प्रसिद्ध 108 फुट ऊॅची अनोखी भगवान आदिनाथ जी की मूर्ति का निर्माण हुआ जो युगों–युगों तक जैन समाज के मानस पटल पर अंकित होकर आपके इस अद्धितीय अवदान को भुला नहीं सकेगी। अपने विरोधी से भी नफरत या क्रोध नहीं करना अपितु उनकी बात को शांतिपूर्वक सुनकर अपनी बात मनवा लेना। विरोधी से मतभेद होते हुए भी मनभेद न रखना। विनम्रता, धैर्य, वैज्ञानिकता आदि गुणों के कारण से आपने अयोध्या जैसी विवादास्पद जगह में तथा अनेको विशाल मंदिरों के निर्माण कार्यो में आई अनेकों विध्न वाधाओं पर शांति पूर्वक विजय प्राप्त की और सभी कार्य विधिवत सुचारू रूप से संपन्न कराऐं।

6. आर्यिका संत वहीं है जिसकी सरलता का कोई अंत न हो। जिसके अंतःकरण में वात्सल्य और स्नेह का झरना प्रवाहमान हो। जिनकी वाणी में जन–जन के कल्याण की कामना प्रकट हो और सदैव स्वकल्याण के साथ जीव मात्र के कल्याण की कामना की हो। ऐसे ही गुणों से ओतप्रोत हमारी अराध्य परम पूज्य गणिनी ज्ञानमती माता जी को प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर प्रणाम करते हैं।

7. विश्व की न्यायपालिका के ही अनुरूप संपूर्ण जैन दर्शन प्रमाण के ठोस धरातम पर स्थित है। माता जी जैन न्याय ओर प्रमाण की चलती फिरती विश्वविद्यालय है। आपकी सोच अत्यधिक विस्तृत एवं दृष्टि पारखी है। आप कठोर संयमी और तपस्वी है। आपमें शिशु जैसी सरलता और सहजता, एक युवती जैसी कर्मठता और ज्ञान की प्रौढ़ता विद्यमान है। आप जैन समाज के संगठनात्मक षडयंत्रों से हमेशा दूर रहती है। भगवान ने आपको सदैव निष्ठापूर्वक, निष्पक्ष एवं प्रभावी चिंतन करने में सहायता प्रदान की है। आप वात्सल्य और उत्साह की जीती जागती तस्वीर है। आपके जीवंत मुख मण्डल पर सदैव जीवटता, ऊर्जा, ताजगी और नई आशा झलकती रहती है। आप अपने व्यक्तित्व से भी ऊपर उठकर सोचती है। आप साक्षात संवर निर्जरा की प्रतिमूर्ति है। आप आध्यात्मिक आकाश में इंसानियत का इन्द्र धनुष है। सौहार्द की सितार पर सद्भाव का संगीत है। विकृति के बाजार में संस्कृति का शंखनाद है।

आप ऐसा मानसरोवर है जिसमें कंस जैसे अधम व्यक्ति भी डुबकी लगाकर हंस और परमहंस बनकर बाहर निकल आते हैं। आपके व्यक्तित्व से प्राणि मात्र के प्रति समता और दयाभाव प्रकट होता है। आपके समक्ष पहुॅचकर हिंसा–अहिंसा की वंदना करती है। शक्ति शांति को प्रणाम करती है। पूज्य माता जी एक मात्र आर्यिका है जिन्होंने भारतीय संस्कृति के शाश्वत सिद्धांत परस्परोपग्रहो जीवानाम् एवं वसुधैव कुटुम्बकम को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान किया है और इन सिद्धांतो की उदात्त भावनाओं के अनुरूप जन–जन के विकास में अपना अहर्निश अवदान प्रदान किया। आप वात्सल्यमयी, आत्मीयता, सहजता, सरलता और उदारता की साक्षात मूर्ति है। सत्य, अहिंसा, दया, शक्ति, संयम, अपरिग्रह की प्रतीक हैं। सतत साधना और तपश्चर्या ही आपका जीवन है। सागरसम गंभीर और पर्वतसम अनुकंपा से ओतप्रोत हृदय की धारक है।

8. आपने कठोर श्रम, तप, साधना एवं सतत पुरूषार्थ से के बल पर अपने भाग्य का निर्माण किया है। आप भाग्य के भरोसे नहीं रहीं। आपका यह अटल विश्वास रहा है कि ईश्वर उसी की मदद करता है जो स्वयं अपनी मदद करता है। सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वी की तरह आप ''एकला चलो रे'' के आदर्श को सामने रखते हुए आध्यात्मिक पथ पर बढ़ती चली गई। अपने में मौजूद संस्कारों को परिमार्जित और परिष्कृत करते हुए अपने व्यक्तित्व को संयम और तप से आप्लावित किया। आध्यात्मिक पथ पर चलते हुए आपने व्यवहार में उदारता, सहिष्णुता और विनम्रता बनाये रखी। आत्मिक विकास के लिए स्वाध्याय और सत्संग के साथ–साथ आपने समाज की निष्काम सेवा की। दूसरो के साथ अनावश्यक प्रतियोगिता–प्रतिद्वन्दता से हमेशा दूरी बनाये रखी। अध्यात्म को ही अपने जीवन का पाथेय एवं सहचर बनाया।

9. भगवान महावीर ने कहा कि जो व्यक्ति प्राप्त वस्तु का संविभाग नहीं करता, अर्थात दूसरो को नहीं बॅाटता, वह आध्यात्मिक पथ पर चलने का अधिकारी नहीं है। इस सिद्धांत का पालन करते हुए आपने सदैव अपने विचारों का प्रचार–प्रसार किया है। आप आत्मानुभावी ही नहीं अपितु उभयानुकंपी है। आपने अपनी शिष्याओं को सम्यक्ज्ञान, सम्यकचारित्र, भारतीय संस्कृति में पूर्ण श्रद्धा, सही दिशा, पूरा प्यार, अपनत्व और आत्म विश्वास प्रदान किया है। आपने अपने विचारों को आबाल–वृद्ध तक सफलता पूर्वक पहुँचाया है और आपकी सद्प्रेरणा से अनेकों युवतियाँ साधना के राजपथ पर अग्रसर हुई हैं। बड़ी–बड़ी पुस्तकों और आलेखों में भी आपके पूरे व्यक्तित्व को संकलित करना संभव प्रतीत नहीं होता है। हम सभी आपके पवित्र त्यागमयी जीवन का शताब्दि महोत्सव मनाने के साक्षी हो यही नैनागिरि में विराजे भगवान पार्श्वनाथ से प्रार्थना है।

(15) प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती जी

– न्यायमूर्ति विमला जैन

1. विश्व विख्यात भारतीय संस्कृति में अध्यात्म, योग, धर्म के साथ जीवन का लक्ष्य पाने की गौरवशाली परंपरानुसार आर्यिका पद, नारी जीवन के आध्यात्मिक विकास का चरमोत्कर्ष है। आर्यिकाओं की इन्द्र, चक्रवर्ती, बलभद्र, नारायण, आदि सभी महापुरूष वंदना करते हैं। अतीत की पुण्य संपदा और वर्तमान का पुरुषार्थ दीक्षा में कारण बनता है। धार्मिक संस्कार और धार्मिक आचरण ही त्याग के मार्ग पर ले जाता है। दीक्षा ही आत्मोत्कर्ष का मंगलाचरण है। लौकिक जीवन के उत्थान में त्याग का महत्व होता है। संसार की असारता को स्वीकार करके अपने आत्मकल्याण की भावना रखने वाले जीव महापुण्यशाली होते हैं जो जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर मानव पर्याय को सार्थक कर देते हैं। ऐसा कहते है कि ऐसे तपस्वी जन्म से ही तप के संस्कार लेकर उत्पन्न होते हैं। अंतरंग तो उनका निखरा ही होता है। सिर्फ साधना के बल पर बहिरंग की परतों को सुधारते हैं। इनका जीवन चरित्र विगत जन्मों की साधना का प्रतिफल होता है। धर्म मार्ग पर चलने से स्वयं के पुरूषार्थ के साथ माता–पिता द्वारा मिले संस्कार फलीभूत होते हैं। ऐसे ही संस्कारों की पूँजी और पूर्व का पुण्य लेकर बाला माधुरी जी धर्म मार्ग पर आगे बढ़ी। प्रेरणा स्रोत बनी पूज्य ज्ञानमती माता जी।
2. आपका जन्म 18 मई सन् 1958 ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अमावस्या टिकैत नगर (बाराबंकी) उ.प्र. में हुआ। श्री छोटेलाल एवं सुश्राविका मोहनी देवी आपके सौभाग्यशाली माता–पिता है। आपका नामकरण माधुरी हुआ। नाम के ही अनुरूप आप मधुर कंठ धारणी, हित, मित और प्रिय गुणों से युक्त बाला बनी। पूज्य ज्ञानमती माता जी और परिवार के धार्मिक आध्यात्मिक संस्कारों ने उन्हें धर्म पथ पर चलने और मुक्ति पथ पर आरूढ़ होने की प्रेरणा दी। सुगंध दशमी के शुभ दिन अजमेर (राजस्थान) में आपने ब्रम्हचर्य व्रत धारण किया। तत्पश्चात् 13 अगस्त, 1989 श्रावण शुक्ल एकादशी जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में अपने गृहस्थ जीवन की बड़ी बहिन गणिनी प्रमुख ज्ञानमती जी के सानिध्य में आर्यिका दीक्षा ग्रहण की और आपको आर्यिका चंदनामती माता जी पदनाम मिला। गृहस्थ जीवन की दोनों बहिनों गणिनी प्रमुख आर्यिका ज्ञानमती जी एवं आर्यिका चंदनामती जी ने भगवान ऋषभदेव की पुत्रियों ब्राह्मी और सुन्दरी के युग की परंपरा को जीवंत कर दिया।
3. जिनवाणी की महती सेवा विरले साधकों के द्वारा संभव हो पाती है। बाला माधुरी जी ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार करने के पश्चात् निरंतर अध्ययन करते हुए शास्त्री और

विद्यावाचस्पति की उपाधियों से विभूषित हुई। 8 अप्रैल, 2012 को तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद ने पीएच.डी की मानद उपाधि आपको समर्पित कर गौरव का अनुभव किया। जैन आगम की दार्शनिक और सैद्धांतिक सूझ–बूझ प्राप्त होते ही आपने साहित्य सृजन के रूप में जिनवाणी की सेवा का प्रयास प्रारंभ कर दिया और इस दिशा में आपको महान सफलताऐं मिल रही है।

4. पूज्य चन्दनामती माता जी ऐसी भाग्यवान साधक है जिन्हें सरस्वती की प्रतिमूर्ति गणिनी प्रमुख ज्ञानमती माता जी का संरक्षण, मार्गदर्शन, ज्ञान और संयम की दीक्षा मिली। आप ज्ञानमती माता जी की ग्रहस्थावस्था की छोटी बहिन होकर सर्वोत्तम शिष्या है। धर्म प्रभावना और साधना के कार्यो में आप ज्ञानमती माता जी के साथ छाया की तरह रहती है। ज्ञानमती माता जी की प्रेरणा से जो निर्माण कार्य हुए उनमें आपका महान योगदान रहा। आपमें अद्भुत कार्यक्षमता है, गुरुभक्ति पूर्वक अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए गणिनी प्रमुख ज्ञानमती माता जी की प्रत्येक योजना को साकार करने में आपने अहम भूमिका निभाई।

5. सर्वधर्म समभाव, निर्भीक कार्य संरक्षिका प्रज्ञाश्रमणी चन्दनामती माता जी जिन्होंने पिच्छी कमण्डलु हाथ में लेकर महाव्रतों का पालन करते हुए लेखनी उठाई। चारित्रचन्द्रिका, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, नवग्रहशाति विधान, भक्तामर विधान, समयसार विधान आदि आपकी लेखनी से सृजित हुए है। लगभग 150 से अधिक पुस्तकों के लेखन के अतिरिक्त पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माता जी द्वारा लिपिबद्ध साहित्य ''षट्खण्डागम'' (प्राचीन जैन सूत्र ग्रन्थ) एवं ''भगवान ऋषभदेव चरित्र'' की संस्कृत टीकाओं के हिन्दी अनुवाद, ''समयसार'' एवं ''कुन्दकुन्दमणिमाला'' का हिन्दी पद्यानुवाद, भगवान महावीर स्तोत्र, की संस्कृत एवं हिन्दी टीका, भगवान महावीर हिन्दी–अँग्रेजी शब्दकोष, समयसार के गाथा एवं कलश काव्य, गुरू माता के अमूल्य प्रवचन, आचार्य श्री वीरसागर स्मृतिग्रन्थ, गणिनी आर्यिका माता ज्ञानमती अभिनन्दन ग्रन्थ, कुण्डलपुर अभिनन्दन ग्रन्थ, भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्त्राब्दि ग्रन्थ, जैन वर्शिप (अंग्रेजी में पूजा, भजन, बारह भावना आदि। भजन (लगभग 1000) पूजन, आरती, चालीसा, स्तोत्र, काव्य कला, अनेक छोटी–बड़ी जनोपयोगी मौलिक रचनाओं का सृजन आपकी लेखनी से हुआ। आप आशु कवियत्री है। आपकी रचनाऐं सूझ–बूझ और चिंतन से ओतप्रोत है। आपने जैन धर्म और दर्शन पर विश्वकोष का सृजन कर उसे इण्टरनेट पर सर्वसाधारण के लिए उपलब्ध कराकर युगान्तकारी कार्य किया है। वर्तमान में आप दिगंबर जैन त्रिलोक संस्थान के मासिक पत्र सम्यग्ज्ञान का संपादन कर हम सभी को अनुगृहीत कर रही है। कोरोना काल में मुझे पूज्य चंदना मति जी द्वारा संपादित भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक तृतीय

सहस्त्राब्दि महोत्सव के समापन अवसर पर प्रकाशित ''भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्त्राब्दि ग्रन्थ'' के दर्शन, पठन और मनन का शुभ अवसर मिला। माता जी की मेहनत, उनकी योग्यता, सुरूचि पूर्ण संपादन से मैं आश्चर्यचकित होकर नतमस्तक हुई उनकी विद्वत्ता को बारंबार प्रणाम करती हूॅ। इस ग्रन्थ में ''णमोकार चालीसा'' और ''सम्मेद शिखर चालीसा'' बहुत ही प्रभावक है।

6. आपके उपदेशों में आगम का ज्ञान, परम गुरू का उपदेश, मुक्ति का आलंबन और स्वानुभाव स्पष्ट रूप से प्रकट होता है। आप जैन चिंतन धारा से जैनेतर साधु समाज एवं बच्चों को प्रभावित करने में सफल हुई है। दूसरों को समझाने के लिए एक विशेष भाषा शैली ही नहीं, मनोविज्ञान जैसे विषय का ज्ञान होना आवश्यक होता है। यह कला आपमें भरपूर है। ओजस्वी वाणी में आपके प्रवचन समसामयिक विषयों पर आगम सम्मत होकर तर्कपूर्ण होते है। समझाने के लिए छोटी–छोटी कहानियॉ एवं उदाहरण आपके मधुर कंठ से प्रस्फुटित होते है। विलक्षण प्रतिभा की धनी प्रज्ञाश्रमणी चंदनामती जी अपभ्रंश, प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी, मराठी, ॲंग्रेजी आदि भाषाओं की ज्ञाता है। समकालीन युग चेतना की प्रभावी प्रवाहिका है। वे वर्तमान समस्याओं का समाधान करती हैं। अपने चिंतन, प्रवचन एवं लेखन को युगानुरूप रखतीं हैं। आप अपने भक्तों की व्यक्तिगत, पारिवारिक समस्याओं को भी ध्यान से सुनती और उत्तम समाधान भी देती है। आपका प्रभावी व्यक्तित्व स्मित हास्यपूर्ण मुखमुद्रा से बहते उदात्त स्नेह का हम सभी अनुभव करते है। अध्यात्म के मोक्षदायक आयाम के साथ ही साथ आपने भक्तो को इसी लोक में सर्वतोमुखी विकास के लिए सदैव मंगल आशीर्वाद दिए है। आपके स्पष्ट विचार है कि विभिन्न धर्मो और संप्रदायों में कर्मकाण्ड और पूजा उपासना पद्धतियॉ भिन्न–भिन्न हो सकती है परन्तु लक्ष्य सभी का एक ही होता है।

7. पूज्य माता जी भगवान महावीर के समतावादी और पुरूषार्थवादी दृष्टिकोण से नारी जाति को जागृत करती हैं। उन्होंने नारी जाति के लिए उदाहरण प्रस्तुत किया कि अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रम्हचर्य और अपरिग्रह की अमृतमयी विचारधारा परिवार को सुखी और समृद्ध करने के लिए एक सशक्त साधन है। अनेकांतवाद और स्याद्वाद उसे पारिवारिक ओर सामाजिक विद्वेष से मुक्त रख सकते है। आपके अनुसार जैन दर्शन के ये सिद्धांत नारी जीवन को एक सुखद और सुरभित वातावरण देकर उच्चतम प्रगति पथ पर पहुॅचा सकते है।

8. भगवान से प्रार्थना है कि पूज्य चन्दनामती जी का असाधारण व्यक्तित्व सम्पूर्ण नारी जगत को सद्बुद्धि, साहस एवं शक्ति देकर आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ने की युगों–युगों तक प्रेरणा देता रहें।

(16) पार्श्वनाथ की समवसरण स्थली नैनागिरि जी में गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती जी

— न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जैन

1. सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी (नासिक) महाराष्ट्र में गणिनी प्रमुख आर्यिका ज्ञानमती जी की प्रेरणा से स्थापित 108 फीट की विशालकाय भगवान आदिनाथ की प्रतिमा के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में जाने का सौभाग्य मुझे प्राप्त नहीं हुआ परन्तु पुण्य के प्रतिफलित होने पर महामस्तकाभिषेक में जाने का सुअवसर मिला। दिनॉक 21.10. 2016 को हम लोग मांगीतुंगी पहुॅचे। पूज्य माताजी के ससंघ दर्शन किए। तत्पश्चात् पहाड़ के दर्शन और अभिषेक के पश्चात वापिस हुए। उसी समय हम लोगों ने नैनागिरि क्षेत्र की चर्चा की और वहॉ हो रहे छोटे–छोटे कार्यो से माता जी को अवगत कराया। माता जी से सुविधानुसार नैनागिरि जी पधारने का निवेदन किया। माता जी के बुन्देलखण्ड यात्रा की भावना व्यक्त की। कुछ समय पश्चात कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्ति श्री रवीन्द्र कीर्ति स्वामी जी का भोपाल आगमन हुआ। उस समय भी माता जी की बुन्देलखण्ड यात्रा के संबंध में चर्चा हुई।
2. हम सभी के पुण्योदय से माता जी मांगीतुंगी से विहार करती हुई इन्दौर पहुॅची। तब लगा कि बुन्देलखण्ड अवश्य पधारेंगी। जिला सीहोर और भोपाल में हम उनका स्वागत कर हर्षित हुए। परन्तु हम दोनों को इस बात का अत्यधिक दुख हो रहा था कि नैनागिरि जी में माता जी का स्वागत करने में हम असमर्थ रहेंगे। परन्तु यह बात माता जी को बताने का साहस नहीं जुटा पा रहे थे। कारण यह था कि 7 जनवरी, 2. 019 को मेरा फोर्टिस ऐस्कार्ट हास्पिटल, जयपुर में डॉ. अनूप झुरानी द्वारा दोनों घुटनों का आपरेशन किया जाना था। इसके पूर्व अप्रैल, 2018 में मैने सेल्वी हास्पिटल, इन्दौर में डॉ. विक्रम शाह को दिखाया था। उन्होंने तुरंत आपरेशन के लिए कहा था। हमारे निकट के डॉ. सिद्धार्थ, आर्थोपेडिक्स उस समय जूनियर ही थे। उन्होंने सेकेण्ड ओपीनियन लेने के लिए डॉ. झुरानी का नाम सुझाया। हम लोग अगस्त, 2018 में र्फोटिस हास्पिटल में डॉ. झुरानी के पास जयपुर पहुॅचे। उन्होंने चेकअप के पश्चात् आपरेशन की सलाह दी थी। पारिवारिक सुविधा को ध्यान रखकर बच्चों से सलाह कर आपरेशन की तारीख 7 जनवरी, 2019 तय हुई थी। जस्टिस नरेन्द्र कुमार जैन, अध्यक्ष, मानव अधिकार आयोग ने डॉ. झुरानी से बात की और मेरी पूरी व्यवस्था कर दी थी।

3. हम लोग 4 जनवरी, 2019 को भोपाल से रवाना होकर 5 जनवरी की सुबह जयपुर पहुँचे। आपरेशन के लिए एडवांस राशि रूपये 4 लाख 50 हजार अस्पताल को भेज चुके थे। 5 एवं 6 जनवरी को हमारा फुल वाडी टेस्ट होना थे। मेरा छोटा बेटा विधान एक माह की छुट्टी लेकर लंदन से सीधा 6 जनवरी को जयपुर आ चुका था। बड़ी पुत्रवधु वीनू और छोटी पुत्रवधु निधि ने भी एक–एक माह की छुट्टी के साथ हवाई टिकिट एक के बाद एक ने करा लिए थे। छोटी बेटी विधि 8 जनवरी को जयपुर पहुँच रही थी। उसने भी अपना रिजर्वेशन ले लिया था। हम लोगों ने 20 दिन के लिए भट्टारक की नसियॉ में 2 कमरे बुक करा लिए थे। सभी जरूरी सामान के साथ वहॉ पहुँचे। 5 एवं 6 जनवरी को हमारे सभी प्रकार के टेस्ट हुए। एनस्थीसिया देने वाले डॉक्टर ने भी मेरा इण्टरव्यू जैसा लिया। 6 तारीख को शाम 5 बजे के करीब डॉ. झुरानी ने मेरा पुनः चेकअप किया और कहा आपको आपरेशन की जरूरत नहीं है। मैंने उसी समय सोच लिया कि रूपये 4 लाख 50 हजार वापिस मिलने पर दान में दूंगी। बाद में यह राशि सिंघई सतीशचन्द्र केशरदेवी जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, नैनागिरि को दे दी थी। तत्पश्चात डॉ. नीति रामरखियानी ने देखा। कुछ एक्सरसाईज बताई और अस्पताल से मुक्त होकर एक्सरसाईज के लिए साइकिल खरीदी। 7 जनवरी की शाम की फ्लाईट से वापिस आने की टिकिट ले लिए। 7 जनवरी को सुबह बेटे विधान के साथ आमेर पैलेस देखने पहुँचे। वहीं कुछ शापिंग कर रहे थे। मैसेज आया कि फ्लाईट कैन्सिल हो गई है। दुकान से ही हाईकोर्ट प्रोटोकाल को फोन कर रेलवे का टिकिट लेने का कहा। भाग्य ही था कि ए.सी.– 2 में तीन रिजर्वेशन मिल गए और हम सब 8 जनवरी को सकुशल प्रसन्नचित्त वापिस भोपाल आ गए।

4. 18 जनवरी को बेटे विधान सहित नैनागिरि पहुँचे। साथ में श्री सुरेश जैन साहब के दोनों छोटे भाई मनोज, सुरेन्द्र और उनकी पत्नियॉ संगीता और वर्षा भी थी। सभी बहुत प्रसन्न मुद्रा में थे। रात्रि में माता जी का विश्राम बम्हौरी ग्राम में था। नैनागिरि से हम सभी बम्हौरी पहुँचे और दर्शन कर हर्षित हुए। 19 जनवरी को माता जी का संसघ नैनागिरि में प्रवेश हुआ। हमारे वृहद् परिवार तथा उपस्थित जन समुदाय ने बड़े ही उत्साह और प्रसन्नता के साथ आर्यिका संघ की भव्य अगवानी की। उपरोक्त घटनाऐं लिखने का मेरा केवल यही उद्देश्य है कि पारस प्रभु की कृपा और माता जी के आशीर्वाद से ही घुटनों के आपरेशन की जरूरत नहीं पड़ी। आज भी चलने फिरने लायक हूँ। उम्र से अधिक ही काम कर लेती हूँ।

5. पूज्य माता जी सर्वप्रथम सिंघई सतीशचन्द्र केशरदेवी जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में पधारीं। हम सभी को उनकी आरती और पाद प्रक्षालन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हमारी दोनों देवरानियॉ डॉ. संगीता और वर्षा का माता जी का पाद प्रक्षालन करने का पहला अवसर था। दोनों ही अभिभूत थी। उस समय माता जी के चेहरे पर सतत साधना और तपश्चर्या से सूर्य जैसा तेज, चंद्रमा जैसी शीतलता, पर्वत जैसी अडिगता और सिंह जैसी निर्भीकता थी।

6. 19 जनवरी को सुबह 6 बजे मेरा पूरा परिवार अभिषेक पूजन के लिए संत भवन जहॉ माता जी का निवास था पहुॅचा। माता जी के सानिध्य में पूजन अभिषेक हुआ। प्रज्ञाश्रमणी चन्दना माता जी के मधुर कण्ठ से शांति धारा का पाठ संपन्न हुआ। यहॉ यह उल्लेख करना चाहूॅगी कि जैसे ही मैंने पूजा अभिषेक के लिए कक्ष में प्रवेश किया चन्दनामती माता जी के चेहरे पर अत्यधिक प्रसन्नता और वात्सल्य भाव दिखा। उस समय की छवि अभी भी मेरी नजरों के सामने रहती है। तत्पश्चात् 8.30 बजे पर्वतराज पर आर्यिका माता संघ सहित पहुॅची। वहॉ भी शांतिधारा और माता जी के पाद प्रक्षालन का सौभाग्य हमारे परिवार को ही प्राप्त हुआ। हम सभी धन्य हुए। उनका प्रवचन सुना और अपने भाग्य को सराहा।

7. संध्याकाल हम सभी दर्शन को गए। पूज्य माता जी ज्ञानमती जी तथा चन्दनामती माता जी ने मेरे बेटे विधान तथा उसके छोटे चाचा सुरेन्द्र सिंघई से बहुत आत्मीयता से देर तक बातचीत की। विधान को पहला अनुभव था कि कोई साध्वी मॉ से भी बढ़कर स्नेह के साथ उससे बातचीत कर आशीर्वाद दे रही है।

8. 21 जनवरी को विहार के समय आर्यिकारत्न स्वर्णमती माता जी से कुछ समय चर्चा हुई। उस समय स्वर्णमती माता जी के पैर में चोट थी, इसके वाबजूद भी वे पैदल ही चल रही थी। मेरी देवरानी डॉ. संगीता एवं श्रीमती वर्षा कुछ दूरी तक प्रज्ञाश्रमणी चंदनामती माता जी के साथ चली। माता जी के स्नेहपूर्ण वार्तालाप से वह दोनों बहुत ही प्रसन्न दिखाई दे रही थी।

9. उपरिलिखित बातें मात्र घटनाऐं नहीं है। यह सब साध्वी माता के आशीर्वाद, स्नेह एवं हम सबके शुभ कर्मो का फल ही है कि नैनागिरि जी में माता जी की आगवानी करने, उनके सानिध्य में पूजन और अभिषेक करने का सौभाग्य हमें मिल सका। साधु, आर्यिकाओं के आशीर्वाद, उनकी कृपा से बड़ी से बड़ी समस्या टल जाती है और सफलता प्राप्त हो जाती है की कहानियाँ अभी तक पढ़ी थीं। अब मैंने इन आश्चर्यजनक घटनाओं का यथार्थ में अनुभव किया।

10. इसी संदर्भ में एक सत्य घटना का उल्लेख और करना चाहूँगी जिसकी मैं स्वयं साक्षी हूँ। सन् 2006–07 में मेरी पदस्थापना जिला एवं सत्र न्यायाधीश टीकमगढ़, म.प्र. के पद पर थी। मेरे समक्ष पॉच व्यक्तियों पर एक महिला को जिंदा जलाकर मारने एवं उसके तथाकथित पति को जलाकर मारने के प्रयास का आरोप था। यहॉ यह उल्लेख भी आवश्यक है कि दोनों तथाकथित पति–पत्नि थे और सभी कुकर्मो में लिप्त थे। महिला का नाम मालतीबाई (परिवर्तित नाम) पुरूष का नाम चंदन सिंह (परिवर्तित नाम) था। महिला मालतीबाई जलने के करीब एक सप्ताह पश्चात् बहुत बुरी तरह से तड़प–तड़प कर मृत्यु को प्राप्त हुई। वहीं चंदन सिंह अधजला जिंदा लाश के रूप में मेरे समक्ष अपना कथन देने उपस्थित हुआ। जलने से उसके हाथ, पैर, मुॅह और पूरा शरीर टेड़ा हो चुका था। ऐसा प्रतीत होता था जैसे उसके कुकर्मो के फल साक्षात भोगने के लिए जिंदा रहा हो। मैं हतप्रभ और विस्मित हो गई। जब प्रतिपरीक्षण में उसने स्वीकार किया कि मृतका मालतीबाई एवं उसने जैन मुनि को सिगरेट से जलाया था। जैसा बोया वैसा पाया यह चरितार्थ हो रहा था। उनके कर्मो का फल जैसे का तैसा उन्हें मिला। एक संत के साथ दुव्यर्वहार करने के परिणाम की मैं प्रत्यक्षदर्शी थी और यह स्पष्टतः परिलक्षित हो रहा था कि कर्म की शक्ति अपने आप में एक विचित्र पहेली है। कर्मो की गति बड़ी गहन है। कर्म अच्छे हो या बुरे, शुभ हो या अशुभ, पाप कर्म हो या पुण्य कर्म, उनके फल हमें मिलते अवश्य है। प्रत्येक व्यक्ति की आत्म चेतना ही चित्रगुप्त बनकर हर पल हमारे कर्मो का लेखा–जोखा रखती है और समय आने पर हमारे समक्ष उन कर्मो का फल प्रस्तुत करती है। कुछ कर्मो का फल हमें तुरंत मिल जाता है। कर्मो का फल जैसे का तैसा मिलता है। अर्थात जैसा बोते है वैसा ही पाते है।

11. पूज्य गणिनी प्रमुख ज्ञानमती जी के बारे में लिखना अंतहीन है। आपके जीवन की गहराई को नापना मुश्किल है। आपके जीवन से जाना जा सकता है कि परमज्ञान के लिए, अच्छा और सच्चा जीवन जीने के लिए किसी डिग्री की आवश्यकता नहीं है। आपके उपदेश मात्र चर्चा में ही नहीं, किन्तु चर्या में लाकर प्राणिमात्र को मुक्ति का मार्ग दिखाते हैं। आपका उपदेश हो सकता है कभी–कभी सामान्य लगे परन्तु उसका प्रभाव गहरा होता है। आपका जीवन ही उपदेश है। हर कार्य शुभ, मंगल और श्रेष्ठ है। आपका प्रत्येक कार्य स्वार्थ और अहम् से परे है। आप ज्ञान धन की धनी है। आत्म साधना के लिए जप, तप, ध्यान करते हुए आध्यात्मिक पथ पर निरंतर बढ़ती जा रही है। इसी मार्ग पर चलने और बढ़ने के लिए सभी का मार्ग प्रशस्त कर आशीर्वाद देती रहती है। आप साहित्य सर्जक ही नहीं, अपितु साहित्य सर्जकों की निर्माता है।

12. कहते है कि साधु संत की पहचान मात्र इस बात से नहीं कि उन्हें शास्त्रों का कितना अधिक ज्ञान है बल्कि उनके द्वारा लोकहित में किए गए कार्यो से होती है और वहीं उन्हें सच्चा संत बनाते हैं। आपके द्वारा किए गए लोकहित के कार्यो ने ही आपको संत समुदाय में उच्च स्थान दिलाया है।

13. आपके संबंध में सिर्फ इतना ही कहना चाहूँगी कि –

- ❖ आप आध्यात्मिक आकाश में मानवीयता का इन्द्र धनुष है।
- ❖ आप सौहार्द्र की सितार पर सद्भाव का संगीत है।
- ❖ आप विकृति के बाजार में संस्कृति का शंखनाद है।
- ❖ आप प्यार की पेढ़ी पर परमात्मा की प्रार्थना है।
- ❖ आप समाधिमरण का बीज देती है।
- ❖ आप आचरण के आशीष देती है।
- ❖ आप जागरण का ताबीज देती है।
- ❖ आप कभी नष्ट न हो वह चीज देती है।

(17) स्टेच्यू ऑफ अहिंसा के महामस्तकाभिषेक के अवसर पर ऋषभगिरि, मांगीतुंगी में उद्बोधन

दिनांक 22.10.2016

(न्यायमूर्ति) विमला जैन

1. परम पूज्य आर्यिका ज्ञानमति माता जी, प्रज्ञाश्रमणी चंदनामति माता जी एवं समस्त आर्यिका संघ को सादर वंदामि। कर्मयोगी रवीन्द्रकीर्ति जी स्वामी को सादर प्रणाम। सभी ब्रह्मचारी बहिनों एवं उपस्थित समुदाय को सविनय जयजिनेन्द्र।

2. लंबे समय के बाद ही सही पर भगवान ऋषभनाथ एवं पूज्य माता जी के दर्शन और भगवान के अभिषेक करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह हमारे कर्मों का ही सुफल है।

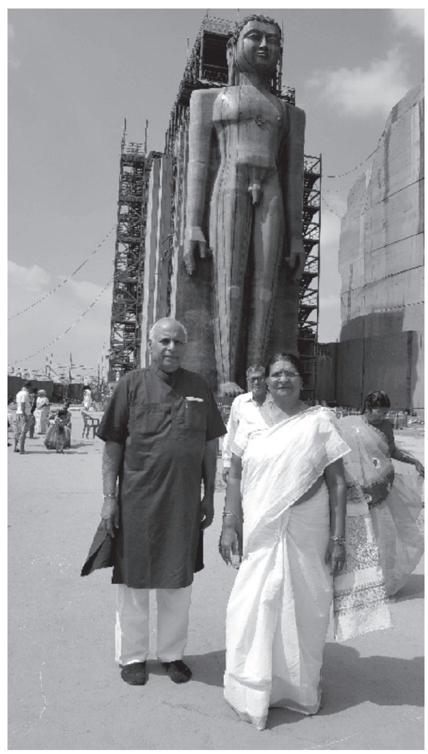

3. माता जी की प्रेरणा से निर्मित तीर्थो की एक श्रृंखला है। जिसमें सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी (नासिक) महाराष्ट्र में ऋषभगिरि पर अखण्ड पाषाण से बनी विश्व की सबसे ऊँची दिगंबर जैन गगनचुंबी प्रतिमा 108 फीट की ऊँचाई लिए भगवान ऋषभदेव की है। जिसे द स्टेच्यु ऑफ अहिंसा भी कहा गया है। जिसका पंचकल्याणक महोत्सव 11 से 17 फरवरी, 2016 तक तथा भगवान का महामस्तकाभिषेक 18 फरवरी, 2016 से अक्टूबर, 2016 तक जल, दुग्ध, नारियल रस, सर्करा रस, इच्छु रस, संतरा रस, मुसम्बी रस, दधि, हरिद्रा सर्वोषधि, सफेद चंदन, लाल चंदन, कल्प चूर्ण, केशर, पुष्पों से लगातार हो रहा है। यात्रियों की सुविधा का भी बहुत आत्मीयता के साथ ध्यान रखा गया। आने जाने ठहरने एवं भोजन की उत्कृष्ट व्यवस्था की गई। पंचकल्याणक महोत्सव में पूज्य मुनिगण, आर्यिकागण, ब्रह्मचारी वर्ग, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, मुख्यमंत्री, मंत्री, न्यायाधीशगण, वरिष्ठ अधिकारीगण, समाज के श्रेष्ठि वर्ग एवं लाखों की संख्या में सामान्य जन सम्मिलित होकर अपने जीवन को धन्य कर पुण्य अर्जित कर रहे हैं।

4. यहॉ विराजित पूज्य माता जी के शास्त्रों का सम्यक्ज्ञान आपके सानिध्य में हो रहे कार्यो में स्पष्ट झलक रहा है। आपकी प्रसन्न मुद्रा सामने वाले को भी प्रसन्न रहने के लिए प्रेरित कर रही है। आपने संसार के प्रत्येक प्राणी से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने को ही अहिंसा बताया है। आप कभी भी सांप्रदायिकता के विष वृक्ष को उगने और फैलने नहीं देती है। आप विरोधी संप्रदायों में भी एकता के सूत्रों की खोज कर उनके बीच प्रभावी ढंग से एकता की स्थापना के लिए प्रयत्नशील रहती हैं क्योंकि सांप्रदायिक कट्टरता, विवाद और विग्रह से अशांति जन्म लेती है। प्रत्येक धर्म अहिंसा, अनेकांत, सहिष्णुता और त्याग पर आधारित है। यदि धर्म ही सांप्रदायिक असंतोष ओर विवाद का जनक बन गया तो विश्व की बड़ी से बड़ी शक्ति भी हिंसा को रोकने में कभी सफल नहीं हो सकेगी।

5. समाज का प्रत्येक व्यक्ति सफलता प्राप्त करें। नैतिक मूल्यों का पालन करता रहे ऐसी ही भावना आपकी हमेशा रही है। आपने हम सभी को संदेश दिया कि जो व्यक्ति पूरी ईमानदारी, मनोयोग और समय से काम करता है वह सबसे बड़ा धर्मात्मा है। सफलता उसको ढूढ़ती हुई आती है। आपने बताया कि हमारे व्यवहार में दया, परोपकार, सहिष्णुता ओर सहयोग की भावना हो और उसके अनुसार कार्य करते रहे तो यही सबसे बड़ा धर्म है।

6. पूज्य माता जी तत्वज्ञान और शुद्ध सम्यक्तोन्मुख चेतना की प्रतीक है। आपके प्रवचनों में आगम का सत्य स्वाभाविक आत्मीयता और वात्सल्य के साथ सिर्फ दिमाग से नहीं बल्कि दिल से निसृत होता है। जो श्रोता के मन की गहराईयों को छू जाता है। देह में रहकर विदेह की साधना की कला की ज्ञाता है। आप अप्रतिम सफल साधिका के रूप में पूजित हुई है। पूज्य माता जी ऐसी विदुषी आर्यिका है जो लगातार कई घण्टों तक धाराप्रवाह आगम के अनुकूल प्रवचन करने की क्षमता रखती है। छहढाला की छठवीं ढ़ाल के दूसरे पद में पण्डित दौलतराम जी वर्णी ने लिखा है कि –

जग सुहित कर सब अहित हर, श्रुति सुखद सब संशय हरे।
भ्रम रोग हर जिनके वचन मुख चन्द्र ते अमृत झरें।।

ऐसे ही आपके प्रवचन संसार की भलाई करने वाले, समस्त बुराईयों को नष्ट करने वाले होते है। आप छोटी–छोटी कहानियों एवं घटनाओं के माध्यम से गूढ़ से गूढ़ विषय के अर्थ स्पष्ट कर देने की क्षमता रखती है। आज भी 83 वर्ष की आयु में पारस चेनल के माध्यम से आपके स्पष्ट मंगल प्रवचनों को सुनकर मन प्रसन्न हो उठता है।

7. आपकी जीवन साधना से मुक्ति, मानवीय मूल्यों की वंदना एवं मानसिक ऐश्वर्य के विकास का भागीरथी प्रयत्न वंदनीय है। आप जाति, धर्म, वर्ग, संप्रदाय के भेद से दूर पूरी की पूरी मानव जाति की आत्मोत्कर्ष की स्थापना को समर्पित है।

8. पूज्य आर्यिका माता जी की कृपा, आशीर्वाद एवं वात्सल्य भाव का वर्णन करना सूरज को दीपक दिखाने जैसा है। मेरे और मेरे परिवार के प्रति उनका पूरा वरदहस्त और आशीर्वाद रहा है। हाईकोर्ट जज के लिए जब मेरे नाम की अनुशंसा हुई उस समय माता जी के दर्शन करने हम सपरिवार हस्तिनापुर गए और उन्हें अवगत कराया। उन्होंने एक मंत्र की माला फेरने को कहा। साथ ही मुझे मंत्रित वस्तु दी जो आज भी मैं धारण करती हूँ। उनके आशीर्वाद से म.प्र. उच्च न्यायालय पद मुझे प्राप्त हुआ, जो कि एक संवैधानिक पद है। वर्तमान में मेरा कार्य पूरी सफलता और निर्विघ्न रूप से चल रहा है।

9. आपके विचारों का नवनीत युगों–युगों तक संपूर्ण मानवता का मार्गदर्शन करें, हमारी प्रमाद मुर्छा को तोड़े, हमें अंधकार से दूर प्रकाश के उत्स की ओर ले जाने का मार्ग बताता रहें, हमारी जड़तर की इति कर हमें सकारात्मक रूप से गतिशील बनाता रहे, हमें प्रतिपल अधिक चैतन्य, जागरूक, सभ्य और शालीन बनाता रहे, गौ–वत्स सम प्रीति को बढ़ावा देने वाली, ज्ञान की मूर्ति की वाणी का लाभ, मार्गदर्शन, आशीर्वाद लंबे समय तक प्राप्त होता रहे ऐसी भगवान से प्रार्थना है।

(18) द्रोणागिरि में माता जी के आगमन पर स्वागत उद्बोधन

दिनांक 1 फरवरी, 2019

– न्यायमूर्ति विमला जैन

1. परम विदुषी गणिनी प्रमुख ज्ञानमती माता जी एवं प्रज्ञाश्रमणी चंदनामती माता जी को शत शत नमन। आर्यिका संघ को सादर वंदामि। इस पावन पवित्र क्षेत्र के अध्यक्ष श्री कपूरचन्द्र जी घुवारा, मंत्री श्री भागचन्द्र जी (पीली दुकान), देवियों और सज्जनों सभी को सादर जय जिनेन्द्र।
2. हम सभी का पुण्य प्रतिफलित हुआ और माता जी का ससंघ आगमन बुन्देलखण्ड की पावन धरा पर हुआ। पूरे उत्साह और पवित्र मन से बुन्देलखण्डवासियों ने आपका स्वागत कर स्वयं को कृतार्थ किया। पूज्य माता जी ने भी ससंघ बुन्देलखण्ड के पवित्र और प्राचीन तीर्थो का तथा अनेक ग्रामीण क्षेत्रों के मनोहारी प्राचीन मंदिरों के दर्शन कर प्रसन्नता का अनुभव किया और मोक्ष मार्ग प्रशस्त किया। अब आप सभी का पुण्य प्रति फलित हुआ और माता जी का ससंघ आगमन इस पावन पवित्र द्रोणागिरि क्षेत्र पर हुआ है।
3. माता जी विदुषी होकर वात्सल्य से ओतप्रोत तो है ही उन्होंने बुन्देलखण्ड की यात्रा में एक मिशाल कायम की है। माता जी ने समाज को समरसता, सामंजस्य और एकता का प्रेक्टीकल करके दिखाया कि हम किसी भी संत, पंथ या ग्रन्थ के अनुयायी हो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता वशर्ते कि हम सीताफल की भॉति रहे। यहॉ उपस्थित सभी लोग सीताफल से परिचित होंगे। बहुत स्वादिष्ट और मीठा फल होता है। वह बाहर से अलग–अलग दिखता है परन्तु उसे तोड़ने पर अंदर का गूदा और बीज एक साथ आने को तैयार रहते है। इसमें आर्द्रता रहती है। इसी तरह हम बाहर से अलग–अलग अवश्य दिखें पर हममें आर्द्रता रहें और एक दूसरे को सहयोग करते हुए पूरी जैन समाज और जैन धर्म की उन्नति में सहायक बनें।
4. पूज्य माता जी विश्व की महिला समाज का गौरव है। सम्पूर्ण महिला शक्ति की जीवंत मूर्ति हैं। आप महिला वर्ग की अमूल्य धरोहर एवं उपलब्धि है। आपका समग्र व्यक्तित्व और कृतित्व अभिनन्दनीय है। इसे शब्दों की सीमा में बॉधना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। आपमें ईश्वर प्रेम, मातृत्व प्रेम, समता, ममता, एकता और समरसता सभी कुछ समाहित है। सरस्वती की वरद पुत्री माता ज्ञानमती जी की लेखनी से 450 से अधिक ग्रन्थ प्रसूत हुए है। विशाल साहित्य का सृजन हुआ। जिनवाणी की सेवा में उन्हें महान सफलताऐं मिली। ऐसा लगता है कि जिनवाणी की सेवा ही माता जी का जीवनवृत है।

5. आपकी प्रेरणा से मांगीतुंगी में निर्मित भगवान ऋषभदेव की मूर्ति जो कि एक अलग तीर्थ के रूप में सुन्दरतम आकार ले चुकी है। जहॉ लाखों की संख्या में भक्तगण दर्शन करने पहुँच रहें हैं। जैन समाज की अनुपम धरोहर अब समाज की अनेकों पीढ़ियों के लिए सर्वोत्तम उपहार है।

6. वर्तमान में सारा विश्व भोगवाद की दूषित प्रवृत्ति में जकड़ा हुआ है। पाश्चात्यीकरण के बढ़ते प्रभाव से भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात हो रहा है। धर्म के नाम पर पाखण्ड फैल रहा है। ऐसे समय में आपका साहित्य और आपकी प्रेरणा से हुए निर्माण कार्य ऊर्जा प्रदान करने वाले है। आपका अवदान युगों–युगों तक संसार में अविस्मरणीय रहेगा। जितनी मेरी आयु है उतने सालो का तप ज्ञानमती माता जी का है। इस तरह आपका आध्यात्मिक जन्म और मेरा सांसारिक जन्म सात दशक पूर्व एक ही वर्ष में हुआ है। आपका मुझे अत्यधिक आशीर्वाद और वात्सल्य प्राप्त हुआ।

7. यहाँ विराजमान चन्दनामती माता जी आशु कवियत्री और सिद्धहस्त लेखिका है। आप जिस तीर्थ क्षेत्र पर पहुॅची तुरंत ही वहॉ की पूजा स्तुति को लिखा ही नहीं सुमधुर कंठ से सुबह अभिषेक के बाद पारस चेनल पर प्रसारित किया। आपने बुन्देलखण्ड में ब्राह्मी–सुन्दरी बालिका मण्डल का गठन करने की प्रेरणा दी। आप शिक्षा को हमेशा बढ़ावा देते हुए इस बात पर बल देती है कि बेटियों को सुसंस्कृत और उन्नत करने से ही समूचा मानव समाज विकसित होगा। आपने नारी वर्ग को तनाव से मुक्त रहने और व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन शांत, सुखद, संतुलित, संतुष्ट, शालीन और समृद्ध रखने के लिए प्रेरित किया है।

8. आपके पारस चेनल पर प्रसारित होने वाले प्रवचनों में पवनसुत हनुमान की माता अंजना और मैनासुन्दरी जिन्होंने अपने पति श्रीपाल को कुष्ठ रोग से मुक्त किया था के बारे में सुना है। आपने यह भी बताया कि 22 वें तीर्थंकर नेमिनाथ की दुल्हन राजुलमती ने नारी के अबला विशेषण को झुठलाकर सिद्ध कर दिया कि नारी सबला कैसे बन सकती है। तीर्थंकर महावीर की शिष्या सती चन्दना ने सिद्ध कर दिया कि पहाड़ काटकर आगे बढ़ती हुई गंगा की भॉति नारी के सामने सांसारिक बाधाऐं बेमानी है।

9. आप गरिमामयी, महिमामयी, ममतामयी, वात्सल्यमयी, प्रशंसनीय और वंदनीय है। आपके सानिध्य एवं विचारों से अवगत होने पर नारी वर्ग को साहस, शक्ति एवं ऊर्जा मिलती है। आपने हम सभी को अद्वितीय ज्ञान, प्रभाव और शक्ति से जीवन का सर्वतोमुखी विकास करने के लिए दृढ़ता प्रदान की है। आपने जीवन के शाश्वत

नैतिक मूल्यों को हमारे मस्तिष्क के साथ–साथ हमारे हृदय एवं सम्पूर्ण दैनिक आचार, आहार / विहार में सफलतापूर्वक स्थापित किया है।

10. आप सभी के समक्ष एक बात और रखना चाहूँगी। आप सभी को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के दिगंबर जैन मंदिर, टी.टी. नगर के परिसर में सामाजिक अदालत की स्थापना की गई है। जिसमें आमतौर पर समाज में होने वाले आपसी विवाद, पारिवारिक बॅटवारा, संपत्ति विवाद, पति–पत्नि के घरेलू झगड़े, पड़ोसी से विवाद आदि में दोनों संबंधित पक्षो को आमने–सामने बैठ कर उन्हें सुनकर विस्तृत समझाइस के द्वारा समाधान के ठोस प्रयास किये जाते है। इस समाधान केन्द्र में मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश जस्टिस एन.के. जैन, जस्टिस अभय गोहिल और मैं स्वयं (जस्टिस विमला जैन) सुनवाई करते है। आप लोग भी अपने शहर में इस तरह की समाजिक अदालत स्थापित करने का प्रयास करें जिससे समाज के झगड़े कोर्ट तक न पहुँचे और सामाजिक स्तर पर ही विवादों का निपटारा शांति पूर्वक हो सकें।

(19) श्रीमती सुमन जैन, इन्दौर द्वारा आयोजित

पूज्य गणिनी प्रमुख ज्ञानमती माता जी के गुणानुवाद श्रृंखला में दिया गया उद्‌बोधन, दिनांक 28 अक्टूबर, 2020

– न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जैन

1. परम पूज्य प्रातः स्मरणीय तपोमूर्ति, ममतामयी, ज्ञान की मूर्ति, गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माता जी को शत–शत नमन। पूज्यनीय प्रज्ञाश्रमणी चंदनामती माता जी को बारंबार वंदामि। संघस्थ सभी आर्यिका माताओं को सादर वंदामि। गणिनीप्रमुख आर्यिका ज्ञानमती माता जी की 87 वीं जन्म जयंति के शुभ अवसर पर प्रस्तुत की जाने वाली गुणानुवाद श्रृंखला में आज का कार्यक्रम भी आयोजित है।
2. पूज्य माता जी के गुणों के बारे में चर्चा करना सूर्य को दीपक दिखाने जैसा है। माता जी आप भारतीय संस्कृति की अंतरात्मा है। आपने जैन संस्कृति की व्यापक आध्यात्मिक व्यवस्था को गहरी निष्ठा और गंभीरता में अंगीकार किया है। आपने अपने जीवन को मंदिर की तरह पावन, पोथी की तरह ज्ञान से पूर्ण और शास्त्रों की भॉति अनुभव से परिपूर्ण बना लिया है। आप सतत बहती सरिता एवं पूरे वातावरण में फैली सुगंधित वायु है। आप नई सुबह की आगाज है। आपके संदेशों में एकता, ममता, विनम्रता, शुचिता और मानव प्रेम की प्रधानता होती है।
3. आपकी जिव्हा और लेखनी पर सरस्वती विराजमान है। आपकी रचनाओं को पढ़कर, देखकर और सुनकर ऐसा लगता है कि जिनवाणी की सेवा ही आपका जीवनवृत है। आपकी प्रेरणा और कुशल मार्गदर्शन में तीर्थंकरों के जन्म एवं कल्याणक भूमियों का संरक्षण, संवर्द्धन एवं विकास तथा अनोखी मूर्तियों का निर्माण हुआ।
4. विश्व की न्यायपालिका के ही अनुरूप संपूर्ण जैन दर्शन प्रमाण के ठोस धरातल पर स्थित है। माता जी जैन न्याय और प्रमाण की चलती फिरती विश्वविद्यालय है। आपकी सोच अत्यधिक विस्तृत और दृष्टि पारखी है। आप कठोर, संयमी और तपस्वी है। आपमें शिशु जैसी सरलता और सहजता, युवती जैसी कर्मठता और ज्ञान की प्रौढ़ता विद्यमान है। आप सागर सम गंभीर और पर्वत सम अनुकंपा से ओतप्रोत हृदय की धारक है। आपने कठोर श्रम, तप, साधना एवं सतत पुरूषार्थ के बल पर अपने भाग्य का निर्माण किया है। आपने आत्मिक विकास के लिए स्वाध्याय और सत्संग के साथ–साथ समाज की निष्काम सेवा की है। बड़ी–बड़ी पुस्तकों और आलेखों में भी

आपके व्यक्तित्व को संकलित करना संभव प्रतीत नहीं होता है। हम आपके पवित्र त्यागमयी जीवन का शताब्दि महोत्सव मनाने के साक्षी हो यही नैनागिरि जी में विराजे भगवान पार्श्वप्रभु से प्रार्थना है।

5. आज के कार्यक्रम की आयोजक सुमन जी और मैने एक ही साथ गृहस्थ जीवन की शुरूआत की। हमारा परिवार एक दूसरे के सुख–दुख में हमेशा से सहभागी रहे है। उनका वक्तव्य उत्साह वर्धक रहा। बहुत–बहुत बधाई।

6. हम सभी को हमेशा की भाँति पूज्य माताजी का वात्सल्यमयी आशीर्वाद मिलता रहे। हम ऐसी कामना करते हैं।

(20) आर्यिकाशिरोमणी श्री ज्ञानमती माता जी की ससंघ नैनागिरि यात्रा

– डॉ. संगीता जैन

1. जनवरी, 2019 में गणिनी प्रमुख आर्यिका ज्ञानमती माता जी का ससंघ मंगल प्रवेश नैनागिरि सिद्धक्षेत्र में हुआ। पूज्यनीय माता जी बुन्देलखण्ड के तीर्थ क्षेत्रों के दर्शनार्थ यात्रा पर पधारी थी।
2. मैं अपने आपको धन्य समझती हूॅ कि सिद्धक्षेत्र नैनागिरि जी में मेरी ससुराल है और हमारे परिवार पर पारसप्रभु की कृपा हमेशा बनी रहती है।
3. मेरे बड़े जेठ जी श्री सुरेश जैन आई.ए.एस. एवं मेरी जेठानी जस्टिस विमला जैन अनेक धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों में संलग्न रहते है। आप लोगों को हमेशा से ही आचार्य, मुनियों एवं आर्यिका माताओं का सानिध्य और आशीर्वाद प्राप्त होता रहा है। उन्होंने हम लोगो से कहा कि हम सब लोगों को पूज्यनीय माताजी के नैनागिरि आगमन पर दर्शन करने के लिए अपने ग्राम नैनागिरि चलना है। मुझे तो लगा जैसे मेरे मन की मुराद पूरी हो गई क्योंकि हमारे परिवार को नेनागिरि जी में अद्‌भुत शांति और सुकून का अनुभव होता है। वहॉ जाने के लिए हम सब हमेशा उत्साहित रहते है और साथ में पूज्यनीय माताजी का ससंघ सानिध्य मिल जाये मानों सोने पर सुहागा। मन बाग–बाग हो गया।
4. पूज्य माता जी का व्यक्तित्व बहुआयामी है। आपने हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप जैन मंदिर और मांगीतुंगी में अहिंसा की सर्वोच्च प्रतिमा का निर्माण करवाया था। जैन समुदाय में आपके प्रवचनों का महत्वपूर्ण स्थान है। आर्यिका ज्ञानमती माता जी ने संस्कृत, मराठी, कन्नड़ और हिन्दी भाषाओं में 460 ग्रन्थ लिखे। इतना ही नहीं 85 वर्षीय आर्यिका माता जी 66 साल का साध्वी का जीवन व्यतीत कर चुकी है। जो किसी भी दिगंबर जैन समाज के 1500 साधु साध्वियों में सबसे अधिक है। आप जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी है।
5. हम सब लोग भोपाल से अपने पूरे परिवार के साथ नैनागिरि पहॅुचे और गणिनी प्रमुख ज्ञानमती माताजी, आर्यिका चंदनामती माता जी के ससंध दर्शन किए। हम सभी लोग सुबह 5 बजे स्नानादि कार्यो से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्रों में माता जी के सानिध्य में भगवान का अभिषेक किया। मन एकदम प्रफुल्लित हो गया। ममतामयी माता जी ने पूरे परिवार को आशीर्वाद दिया। मैं श्रद्धा से भर उठी।

6. पूजनीय माता जी के आगमन पर सिद्धक्षेत्र नैनागिरि में विशाल धर्मसभा का आयोजन किया गया। धर्मसभा को माताजी ने संबोधित किया। साथ ही नैनागिरि पर्वत के दर्शन किये। माता जी बिना बोले ही ऑख बंद करके अपनी साधनामयी तपस्या में तल्लीन हो गई। वह क्षण नैनागिरि वासियों और हम सब लोगों को अद्‌भुत था। माताजी जिस आयु के पड़ाव पर है उसमें लोग एक कदम भी बाहर नहीं निकालते, लेकिन ज्ञानमती माता जी भीषणतम शीत काल में बुन्देलखण्ड के घनघोर जंगलों के बीच अपनी यात्रा की एवं बुन्देलखण्ड के वैभव एवं ऐतिहासिक धरोहर को देखकर प्रसन्न हुई। उन्होंने यह संदेश दिया कि समाज इन धरोहर को संरक्षित करें।

7. उन्होंने प्रवचन में बताया कि किसी भी समाज, समुदाय या देश का विकास वहॉ के निवासियों के अच्छे आचरण से होता है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय एवं अनुशासन को अपनाकर परिवार का, समाज का ओर देश का वातावरण श्रेष्ठ बनता है। यदि सत्य अहिंसा के विचार प्रत्येक व्यक्ति के अंदर समाहित हो जावे तो परिवार का संरक्षण और राष्ट्र के गौरव की वृद्धि अपने आप हो जायेगी। सुख और शांति केवल प्रेम, सौहार्द्र एवं सहानुभूति से ही प्राप्त किए जा सकते है। परस्पर प्रेम बढ़ेगा तो आचरण

श्रेष्ठ हो जावेगा। इसी में परिवार का गौरव और मानव जाति का कल्याण है। वात्सल्यमयी माता जी ने बताया कि वर्तमान समाज में विवाद और झगड़े बढ़ते जा रहे है। इन सबको मिटाने का मात्र एक उपाय है। एक दूसरे को गले लगाइये। शत्रुता के भाव मिटाने का मुख्य आधार सौहार्द्र है। इसके लिए वाक्संयम और मृदुवाणी आवश्यक है। सत्यवाणी भी आवश्यक है और इस तरह विरोध को विनोद में बदला जा सकता है। जैन धर्म में अहिंसा और अनेकांत की अलग ही महिमा है। इन दो चीजों से प्राणिमात्र के प्रति करूणा और मैत्री का भाव जागृत होता है। जिससे मानव महामानव की कोटि में पहुॅच जाता है। व्यावहारिक रूप में स्वस्थ रहने के लिए मैत्री भाव होना आवश्यक है। माता जी ने हम सभी को संदेश दिया कि सभी लोग मेरी भावना की निम्नांकित पंक्तियॉ प्रतिदिन अवश्य पढ़ें :–

मैत्री भाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे।
दीन–दुखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा स्त्रोत बहे।।
दुर्जन क्रूर कुमार्ग रतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे।
साम्यभाव रक्खूं मैं उन पर, ऐसी परिणिति हो जावे।।

(21) मेरे वृहद परिवार को नैनागिरि जी में गणिनी प्रमुख ज्ञानमती माता जी का आशीर्वाद

– श्रीमती वर्षा सिंघई, एडवोकेट

1. दिनांक 18 जनवरी, 2019 को मेरा वृहद परिवार जिनमें मेरे पति श्री सुरेन्द्र सिंघई, बेटी सौम्या, मेरे बड़े जेठ जी श्री सुरेश जैन, जिठानी विमला जी, जेठ जी श्री मनोज जैन, जिठानी डॉ. संगीता जैन, मेरे बड़े जेठ जी का बेटा विधान सभी नैनागिरि जी शाम को पहुॅचे। माता जी ससंघ बम्हौरी पधार चुकी है। यह जानकारी मिलने पर हमारा पूरा परिवार शाम करीब 7 बजे बम्हौरी पहुॅचा। माता जी सामायिक में विराजमान थे। कुछ समय पश्चात हम सभी ने उनके दर्शन किए तथा नैनागिरि जी पधारने हेतु श्रीफल भेंट किए।
2. दिनॉक 19 जनवरी को माता जी का आगमन भगवान पार्श्वनाथ की समवसरण स्थली परम पवित्र सिद्ध क्षेत्र नैनागिरि जी में हुआ। हम सभी परिवार जन तथा जन समुदाय तो प्रसन्न हुआ ही, माता जी तथा उनका संघ भी नैनागिरि प्रवेश के समय श्रद्धावनत एवं प्रसन्न था। सर्वप्रथम एस.एस.के.जे. स्कूल में पदार्पण हुआ। हम लोगों ने पाद प्रक्षालन एवं आरती की।
3. 20 जनवरी को सुबह मुझे पहली बार माता जी के प्रवास स्थल संत भवन में भगवान का अभिषेक करने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। अभिषेक एवं शांति धारा करके मैं धन्य हो गई। यह मेरे जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि थी। माताजी संघ सहित पहाड़ पर वंदना करने गई। उन्होंने चौबीसी मंदिर एवं भगवान पारसनाथ की मूर्ति की वंदना की। माता जी ने नैनागिरि से मोक्ष गए बदरत्तादि जी पॉच ऋषिराज के दर्शन भी किए। नदी के किनारे सिद्धशिला भी देखी। दिन में उनके अमृत वचनों को सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने प्रवचन में बताया कि दूसरों के लिए प्रेम और सम्मान देना हमारे सुख के लिए महत्वपूर्ण कारक है। निराशा का मुख्य कारण भौतिक वस्तुओं का अभाव नहीं अपितु दूसरों के प्रति प्रेम की कमी है। पूज्य माताजी अत्यधिक वात्सल्य के साथ बोल रही थी कि संसार का प्रत्येक प्राणी सुखी जीवन जीना चाहता है। सभी लोग सुखानुभूति से तृप्त रहना चाहते हैं :–

   जे त्रिभुवन में जीवन अनंत, सुख चाहैं दुख तैं भयवंत।
   तातैं दुखहारी सुखकारि, कहै सीख गुरू करणा धारि।।

4. कल्याण उसी व्यक्ति का हो सकता है जो सुख–दुख में समभाव रखें। विपत्ति में धीरज, उन्नति में क्षमा, सभा में वाक्चातुर्य, युद्ध में पराक्रम, यश में अरूचि, शास्त्र श्रवण में व्यसन होना व्यक्ति को महात्मा बना देता है और व्यक्ति कभी दुखी नहीं होता है।

(22) दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिरि (रेशंदीगिरि) जिला छतरपुर

माता ज्ञानमती ध्यान केन्द्र का लोकार्पण 20 जनवरी, 2019

भगवान ऋषभदेव की विश्व प्रसिद्ध सर्वोच्च प्रतिमा STATUE OF AHINSA की जननी दिव्यशक्ति भारतगौरव गणिनी ज्ञानमती माता जी के पावन सानिध्य, प्रज्ञाश्रमणी आर्यिकारत्न चन्दनामती माता जी के मार्गदर्शन और न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जैन की अध्यक्षता में स्वस्ति श्री पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति जी स्वामी द्वारा विश्व शांति अहिंसा वर्ष में संपन्न किया गया।

सुरेश जैन (आई.ए.एस.) — अध्यक्ष
सन्तोष कुमार 'बैटरी' — उपाध्यक्ष
इंजी. अशोक जैन — कोषाध्यक्ष

सेठ दामोदर जैन — मंत्री
झलकनलाल लोहिया — अध्यक्ष (समिति)

(22) आचार्य शांतिसागर जी की नैनागिरि यात्रा

वर्ष 1929 में आचार्य शांतिसागर जी महाराज ने नैनागिरि की यात्रा की थी। उनकी इस यात्रा की स्मृति में उनके दीक्षा दिवस (फाल्गुन शुक्ला चतुदर्शी शनिवार विक्रम संवत 2010) के अवसर पर नैनागिरि में मार्च 15, ईस्वी सन् 2014 को आयोजित पंचकल्याणक का मोक्षकल्याणक समारोह संपन्न हुआ। यह उल्लेखनीय है कि स्व. श्री पण्डित बंशीधर जी शास्त्री–सोलापुर द्वारा लिखित आचार्य शांतिसागर महामुनि का चरित्र, सखाराम नेमीचन्द्र जैन ग्रन्थमाला के अंतर्गत श्रीमती गुणमाला बेन जव्हेरी, ट्रस्टी श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर ट्रस्ट, कालवॉदेवी मुम्बई द्वारा द्वितीय आवृत्ति के रूप में वर्ष 1995 मे ंप्रकाशित किया गया है। इसके पृष्ठ 137 पर उल्लेख किया गया है कि आचार्य शांतिसागर जी का संघ, जिसमें मुनि वीरसागर जी प्रभावी प्रवचन देते थे, दमोह जिले के ग्राम बाँसा तारखेड़ा (04 अप्रैल, 1929) सागर जिले के नगर गढ़ाकोटा और सागर जिले के ग्राम शाहपुर होते हुए चैत्र शुक्ला 07 मंगलवार संवत् 1986 (तदनुसार सन् 1929) को सागर पहुँचा। सागर से चलकर यह संघ नैनागिरि (रेशंदीगिरि) आया। सेठ कमलापत जैन अपने पुत्र सेठ चिंतामन और पुत्रवधु सोहद्रा बाई के साथ, बम्हौरी से अपनी भैंसों का दूध दुहकर नंगे पैर नैनागिरि लाए। नैनागिरि में नवविवाहित श्री सतीशचन्द्र केशरदेवी को चौका लगाने के लिए प्रेरित किया। अपने मार्गदर्शन में चौका लगवाया और शांतिसागर जी को उनके संघ के साथ आहार दिया। यह उल्लेखनीय है कि सेठ चिंतामन जी के सुपुत्र श्री सेठ हीरालाल जी ने मकरोनिया, सागर में विशाल जिन मंदिर एवं क्षमासागर छात्रावास का निर्माण कराया है। नैनागिरि में पूज्य गणेशप्रसाद जी वर्णी, नैनागिरि तीर्थ के अध्यक्ष श्री शिवप्रसाद मलैया, मंत्री सेठ धनप्रसाद बण्डा, पण्डित मुन्नालाल जी रॉधेलीय, सागर, श्री खुमान ब्या (आदिसागर) बम्हौरी और नैनागिरि में जन्में पण्डित न्यायतीर्थ डॉ. दरबारीलाल जी कोठिया प्रभृति अनेक सज्जनों ने पूज्य आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज का स्वागत किया। नैनागिरि से चलकर यह संघ द्रोणागिरि होते हुए वैशाख शुक्ला सप्तमी को गोरखपुरा जिला छतरपुर पहुॅचा। नैनागिरि से श्री खितई सिंघई अपनी पुत्री श्रीमती केशरदेवी जी के साथ बैलगाड़ी से संघ की व्यवस्था करते हुए संघ के साथ गोरखपुरा गए। गोरखपुरा में श्री खितई सिंघई के घर पूरे संघ का आहार हुआ। श्री खितई सिंघई एवं प्रतिष्ठाचार्य मूलचन्द्र जी गोरखपुरा दूसरे दिन संघ को घुवारा लाये और सभी प्रकार की सुविधाऐं उपलब्ध कराते हुए ललितपुर तक ले गये। संघ ने संवत् 1986 (सन् 1929) में ललितपुर में चातुर्मास किया।

सहसा मुझको आभास हुआ कुछ
जगा मुझमें एक नवप्रकाश।
यह वातायन का था कमाल,
या पाया था मैंने दिव्य आकाश।।
गोधूलि की उस बेला का,
मैं वर्णन कैसे करुँ बयान।
सब कुछ जैसे अप्रत्याशित था,
जिसका न था मुझको तनिक गुमान।।
जैसे–तैसे पलकों में रात्रि बीती,
ब्रह्ममुहूर्त का कैसे करुँ गुणगान ।
पक्षी जैसे–तैसे कलरव करते,
कह रहे हो जैसे, आये हो मुक्ति के धाम।।
प्रातः नित्य कर्मों से निवृत्त हो,
चल पड़ा ढूँढ़ने वो दिव्य कमान।
जाने कैसी आतुरता थी,
पथ प्रदर्शक बन रहे थे सुरेश जी महान।।
गुफा के अन्दर अन्तंस मैं झांकूँ,
क्यों दी ये प्रेरणा में अति हैरान।
शायद था कोई अवलम्बन होना,
जिसका दिया था वृतान्त वखान।।
वह दिवस था कुछ अनमोल है पाना,
विस्तार से वर्णन कैसे करुँ बयान।
ओम नाद से अन्तर चक्षु जागे,
अन्तर में बस गये मुनिसुव्रतनाथ भगवान।।
जनवरी बीस, उन्नीस वर्ष शनि था,
क्या मै। और करुँ गुणगान।
नैनागिरि का रोम–रोम पुलकित था,
गणिनी ज्ञानमति के नाम।।

स्वर्ण, चन्दना संग पीठाधीश,
श्री रवीन्द्रकीर्ति जी भी पधारे।
सारा जगत जिन्हें कर्मठ कर्मयोगी पुकारें,
धन्य हुआ था नैनागिर तीरथ धाम।।
त्रय दिवस तक ज्ञान गंगा बह निकली,
पुलकित हो उठा था सम्पूर्ण ग्राम।।
मंद, सुगंध सुमधुर समीर तिरती है,
तीर्थ धाम पर हुआ दिल कुर्बान।
दूर जहाँ तक दृष्टि जाये,
अविरल, अचल, अनोखे, मुक्ति के धाम।।
मैं अन्जान सफर का रही,
चल पड़ा था यूँ ही समय वितान।
मुझको क्या मालूम था ऐसे,
देख छटा, होगें चक्षु निश्छल निष्काम।।
तन—मन सब आपूरित सा हो गया,
दिव्य छटा का न था मुझे गुमान।
प्रभु अब ऐसी किरपा करना,
जब चाहूँ मैं आऊँ तेरे धाम।।

जय बोलो श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान,
जय बोलो श्री पार्श्वनाथ भगवान।
जय बोलो सिद्ध मंदिर ऊर्जा गतिमान,
प्रभु पुनः इस बार बुलाना अपने इस दिव्य धाम।
प्रभु पुनः इस बार बुलाना अपने इस दिव्य धाम।।

पेज नं.

64

खाली